दी नेक्स्ट पोस्ट

साप्ताहिक

7

3 स्वामी प्रसाद मौर्य ने किया नामांकन

5 इस चुनाव में नोटों की जगह 'मौत के सामान' की हुई रिकार्ड सप्लाई

8 राहुल ही नहीं रास टेलर भी हो चुके हैं टीम मालिक के गुस्से का शिकार, शून्य पर आउट होने की मिली थी सजा

UPHIN51019 | वर्षः 01, अंकः 42 | पृष्ठ संख्याः 8 | मूल्यः 1.00 रू. | सोमवार 13 मई, 2024

रवि किशन ने नामांकन किया दाखिल

गोरखपुर। गोरखपुर लोकसभा क्षेत्र से भाजपा उम्मीदवार रवि किशन ने लोकसभा चुनाव के लिए अपना नामांकन दाखिल किया। लोकसभा क्षेत्र से भाजपा उम्मीदवार रवि किशन ने लोकसभा चुनाव के लिए अपना नामांकन दाखिल किया। रवि किशन ने नामांकन भरने से पहले गोरखनाथ मंदिर में पूजा–अर्चना की। इंडी गठबंधन ने समाजवादी पार्टी नेता काजल निषाद को उस निर्वाचन क्षेत्र से मैदान में उतारा है जहां सातवें चरण में 1 जून को मतदान होना है।

बोले डिप्टी सीएम, सपा ने अयोध्या में कारसेवकों पर गोली चलवाई, भाजपा ने भव्य राम मंदिर बनवाया

कुशीनगर। उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने कहा कि यह लोकसभा चुनाव अयोध्या में भव्य राम मंदिर बनवाने वाले और कार सेवकों पर गोली चलवाने वालों के बीच का है। सपा ने अयोध्या में गोली चलवाकर खून से धरती रंगने का काम किया था। भाजपा वहां भव्य राम मंदिर बनवाया है। बुद्ध इंटर कॉलेज कुशीनगर में बृहस्पतिवार को भाजपा का बूथ अध्यक्ष सम्मेलन आयोजित हुआ। मुख्य अतिथि प्रदेश के उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने कहा कि यह लोकसभा चुनाव अयोध्या में भव्य राम मंदिर बनवाने वाले और कार सेवकों पर गोली चलवाने वालों के बीच का है। सपा ने अयोध्या में गोली चलवाकर खून से धरती रंगने का काम किया था। भाजपा वहां भव्य राम मंदिर बनवाया है। तीन चरणों के मतदान में विजय पताका फहर रहा है। पीएम के कल्याणकारी योजनाओं पर लोगों का भरोसा बढ़ा है। उन्होने कहा कि जम्मू कश्मीर में धारा 370 निष्प्रभावी करने का काम भाजपा ने किया है। भाजपा सरकार ने गरीब कल्याण योजनाओं को जन–जन तक पहुंचाने का काम कर रही है। अब तक चार करोड़ पात्रों को प्रधानमंत्री आवास योजना से पक्का मकान मुहैया कराया है। और तीन करोड़ को देने का लक्ष्य है। शौचालय देकर महिलाओं को सहूलियत देने का काम किया है। उन्हें इज्जत से जीने का हक मिला है। जल जीवन मिशन योजना से हर घर को

पेयजल आपूर्ति कर रहे हैं। 75 जिलों में सड़कों का जाल बिछाकर सुगम व्यवस्था दिया।

सपा पर तंज कसते हुए कहा कि उनके सरकार में बिजली सैफई और रामपुर चली जाती थी। कायाकल्प योजना से बेसिक शिक्षा में सुधार किया। वर्तमान में एक करोड़ 92 लाख बच्चे पढ़ रहे हैं। ड्रेस, पाठ्य–पुस्तकों को दिया जा रहा है। ग्राम सचिवालय से योजनाओं की जानकारी ओर अन्य सुविधाएं दी जा रही है।

प्रदेश में पूर्व में सिर्फ 16–17मेडिकल कालेज थे,अब मोदी सरकार में वन डिस्ट्रिक्ट,वन वन मेडिकल कालेज से 65 मेडिकल कॉलेज क्रियाशील हैं। 14 जल्द बनेंगे। नया भारत है,अब भारत बोलता है,तो दुनिया सुनती हैं। पाक के आतंकवादी कैंपों को नष्ट करने का काम भाजपा ने किया।

एसटीएफ ने लॉरेंस बिश्नोई गैंग के सदस्य को गोरखपुर से दबोचा

गोरखपुर। पूछताछ पर आरोपी मनीष कुमार यादव ने बताया कि गोरखपुर के आदर्श नगर सिंघड़िया निवासी शशांक पांडेय के जरिये वह लॉरेंस बिश्नोई गैंग से जुड़ा। शशांक जब अंबाला जेल में बंद था, वहीं उसकी मुलाकात विक्की लाला से जेल में हुई थी। एसटीएफ ने गुरुवार की शाम को चिलुआताल इलाके के बरगदवा में रामलीला मैदान के पास से लॉरेंस बिश्नोई गैंग के सदस्य को गिरफ्तार कर लिया। गोरखपुर एसटीएफ व

अंबाला एसटीएफ की संयुक्त टीम को यह सफलता प्राप्त हुई है। मनीष लॉरेंस बिश्नोई गैंग को असलहा सप्लाई करने का काम करता था। उसके खिलाफ हरियाणा के कुरुक्षेत्र जिले के शाहाबाद थाने में वर्ष 2023 में आर्म्स एक्ट का केस दर्ज था। हरियाणा एसटीएफ ने लॉरेंस बिश्नोई गैंस से जुड़े सदस्यों की तलाश में मदद के लिए यूपी एसटीएफ से मदद मांगी थी। गोरखपुर एसटीएफ की टीम गैंग से जुड़े सदस्यों की तलाश में जुटी थी। इस बीच एसटीएफ को लॉरेंस बिश्नोई गैंग के सदस्य के गोरखपुर होने की सूचना मिली। गोरखपुर एसटीएफ और अंबाला एसटीएफ की संयुक्त टीम ने बृहस्पतिवार की शाम करीब 5 बजे चिलुआताल इलाके के बरगदवा में रामलीला मैदान के पास से उसे गिरफ्तार कर लिया। उसकी पहचान बरगदवा के रामलीला मैदान निवासी मनीष कुमार यादव पुत्र सदानंद यादव के रूप में हुई। वह लॉरेंस बिश्नोई गैंग को असलहा सप्लाई करता था। लारेन्स बिश्नोई गैंग को असलहा सप्लाई करने के संबंध में वर्ष 2023 में हरियाणा के कुरूक्षेत्र जिले के शाहाबाद थाने में आर्म्स एक्ट का केस दर्ज है। वह इस केस में वांछित चल रहा था।

गोरखपुर के शशांक के जरिय लॉरेंस बिश्नोई गैंग से जुड़ा मनीष

एसटीएफ की पूछताछ पर गिरफ्तार मनीष कुमार यादव ने बताया कि गोरखपुर के आदर्श नगर सिंघड़िया निवासी शशांक पांडेय के जरिये वह लॉरेंस बिश्नोई गैंग से जुड़ा। शशांक जब अंबाला जेल में बंद था, वहीं उसकी मुलाकात विक्की लाला से जेल में हुई थी।

विक्की लॉरेंस बिश्नोई गैंग का सदस्य है। जेल से छूटने के बाद शशांक भी लॉरेंस बिश्नोई गैंग का सदस्य बन गया। शशांक के जरिये मनीष कुमार यादव भी लॉरेंस बिश्नोई गैंग से जुड़ गया और ये लोग मध्य प्रदेश के इंदौर से लॉरेंस बिश्नोई गैंग को असलहा सप्लाई करने लगे।

भारत में 79 फीसद लोगों ने ली कोविड वैक्सीन

भारत की कितनी आबादी को लगी कोविशील्ड वैक्सीन, कितनों में रिपोर्ट किए गए दुष्प्रभाव

नई दिल्ली। कोविड की एस्ट्राजेनेका वैक्सीन से होने वाले दुष्प्रभावों को लेकर दुनियाभर में चर्चा हो रही है। अप्रैल के आखिरी सप्ताह में वैक्सीन निर्माता कंपनी ने ब्रिटेन की कोर्ट में स्वीकार किया था कि टीकों के कारण दुर्लभ स्थितियों में थ्रोम्बोसिस विद थ्रोम्बोसाइटोपेनिया सिंड्रोम (टीटीएस) होने का जोखिम हो सकता है। टीटीएस के कारण रक्त के थक्के बनने और खून में प्लेटलेट्स की मात्रा कम होने जैसी समस्याओं का जोखिम रहता है। इन दुष्प्रभावों को लेकर भारत में एस्ट्राजेनेका की वैक्सीन कोविशील्ड ले चुके लोगों में कई तरह का डर देखा जा रहा है। हालांकि स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने स्पष्ट किया है ये दुष्प्रभाव काफी दुर्लभ हैं, इससे डरने की आवश्यकता नहीं है। 10 लाख में से 6–10 लोगों में इस तरह के जोखिम हो सकते हैं।

वैक्सीन के साइड–इफेक्ट्स की खबरों के बीच डॉक्टरों के एक समूह ने गुरुवार को कोविशील्ड वैक्सीन की सुरक्षा पर गहरी चिंता व्यक्त की। डॉक्टरों की टीम ने सरकार से सभी कोविड वैक्सीन के पीछे के वैज्ञानिक तथ्यों की समीक्षा करने और इसके व्यावसायीकरण का दोबारा ऑडिट करने की मांग की है।

भारत में कोविशील्ड वैक्सीन उपलब्ध कराने के लिए एस्ट्राजेनेका की साझेदार सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (एसआईआई) ने बताया कि उसने दिसंबर 2021 में ही वैक्सीन का उत्पादन बंद कर दिया है। इतना ही नहीं कंपनी ने ये भी कहा है कि हमने 2021 में ही टीकों से होने वाले दुष्प्रभावों को खुलासा कर दिया था।

टीकों के दुष्प्रभावों को लेकर पहले ही कर दिया था आगाह

एसआईआई के एक प्रवक्ता ने कहा कि हमने

2021 में ही पैकेजिंग इंसर्ट में वैक्सीन के कारण होने वाले टीटीएस सहित अन्य सभी दुष्प्रभावों के बारे में आगाह कर दिया था। साल 2021 के बाद से कोविशील्ड वैक्सीन का उत्पादन भी बंद कर दिया गया है। मीडिया रिपोर्ट्स में एस्ट्राजेनेका के प्रवक्ता ने बताया चूंकि कोरोना महामारी के दौरान कई प्रकार के कोविड–19 टीके विकसित किए गए और वायरस में म्यूटेशन के साथ इसको भी अपेडट किया गया है। नए टीकों के बाजार में आने के कारण पुरानी वैक्सीन की मांग में गिरावट आई है, जिस वजह से अब इनकी निर्माण या आपूर्ति नहीं की जा रही है।

भारत में कोविड वैक्सीनेशन पर नजर डालें तो पता चलता है कि टीकाकरण अभियान के दौरान भारत में दी गई 220 करोड़ खुराकों में से 79 से अधिक कोविशील्ड की थीं। सरकारी आंकड़ों से पता चलता है कि वैक्सीनेशन के कारण देश में टीटीएस के 36 ज्ञात मामले सामने आए और 18 लोगों की मौत हो गई थी। टीटीएस के लगभग सभी मामले 2021 से संबंधित हैं, जो भारत में टीकाकरण का पहला वर्ष था। 7 मई, 2024 तक भारत में लोगों को टीके की 220 करोड़ से अधिक डोज दी जा चुकी हैं। देश में जो टीके दिए गए हैं उनमें कोविशील्ड, कोवैक्सिन, स्पुतनिक वी, जेमकोवैक, कॉर्बेवैक्स, कोवोवैक्स और इनकोवैक शामिल हैं। इनमें से सबसे ज्यादा 174 करोड़ से ज्यादा टीके के डोज कोविशील्ड के लगे हैं। दूसरे स्थान पर कोवैक्सिन है जिसके 36.39 करोड़ से ज्यादा टीके के डोज के लगे हैं। तीसरे स्थान पर कॉर्बेवैक्स है, जिसके 7.38 करोड़ से ज्यादा टीके के डोज के लगे हैं।

कोविशील्ड वैक्सीन ले चुके लोग डरें नहीं

कोविशील्ड वैक्सीन के कारण होने वाले दुष्प्रभावों को लेकर स्वास्थ्य विशेषज्ञों का स्पष्ट कहना है कि वैक्सीन से होने वाले दुष्प्रभाव काफी दुर्लभ हैं, 10 लाख लोगों में 7–10 में इस तरह के दुष्प्रभाव हो सकते हैं इसलिए टीकाकरण करा चुके लोगों को डरने या घबराने की जरूरत नहीं है। टीकाकरण और दवाओं से होने वाले दुष्प्रभाव आमतौर पर कुछ घंटों से लेकर कुछ दिनों में ही दिखने लगते हैं। चूंकि ज्यादातर लोगों को वैक्सीन ले चुके दो साल से अधिक का समय बीत चुका है, ऐसे में अब टीके से होने वाले दुष्प्रभावों को लेकर चिंतित होने का जरूरत नहीं है।

बिना डाक्टरी सलाह के ब्लड थिनर के हो सकते हैं गंभीर नुकसान

इस बीच कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में एक और चौंकाने वाली बात सामने आई है। खबरों के मुताबिक वैक्सीन के दुष्प्रभावों के डर से बचने के लिए कई लोगों ने खून को पतला करने वाली दवाएं लेनी शुरू कर दी हैं।

कन्नौज में राहुल गांधी बोले– पूरी जिंदगी जेल में रखो डरने वाला नहीं हूं

कन्नौज। झंददंनर छमू: जिले में गठबंधन की रैली को संबोधित करने सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव व कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी पहुंचे हैं। इस मौके पर राहुल गांधी ने कहा कि अदाणी–अंबानी पर घेरा तो अब मोदी जी का मुंह खुल गया है। अखिलेश यादव कन्नौज लोकसभा सीट से इंडिया गठबंधन के प्रत्याशी हैं।

कन्नौज जिले में इंडिया गठबंधन की साझा चुनावी सभा में कांग्रेस नेता राहुल गांधी, सपा नेता अखिलेश यादव और आप नेता संजय सिंह शामिल होने पहुंचे हैं। सबसे पहले अखिलेश यादव ने इत्र देकर राहुल गांधी का स्वागत किया है। बता दें कि कन्नौज से अखिलेश खुद प्रत्याशी हैं और वहां पर 13 मई को मतदान होना है। जनसभा को संबोधित करते हुए राहुल गांधी ने कहा कि अदाणी–अंबानी पर घेरा, तो अब मोदी जी का मुंह खुल गया। यह लोग स्कूल, अस्पताल, बिजली, सड़क नहीं बना सकते हैं। मोदी जी कहते थे गांव में कब्रिस्तान है, श्मशान भी होना चाहिए। उन्होंने कोरोना काल में गांव–गांव को श्मशान बना दिया। आगे कहा कि अरविंद केजरीवाल को जेल भेजा, सतेंद्र जैन को जेल भेजा, मनीष सिसोदिया को जेल भेज दिया। अरे पूरी जिंदगी जेल में रखो डरने वाले नहीं हैं।

वहीं, संजय सिंह ने कहा कि अखिलेश यादव जी की कन्नौज से बहुत बड़ी जीत होने जा रही है। ये लोकतंत्र का आखिरी चुनाव है, भाजपा जीतेगी तो संविधान खत्म हो जाएगा। अखिलेश यादव पांच साल मुख्यमंत्री रहे हैं। ऐसे में भाजपा की नफरत देखिए, मुख्यमंत्री आवास को गंगा जल से धुलवाकर उनका अपमान किया गया है। वहीं, अब कन्नौज में अखिलेश जी मंदिर में गए, तो वहां भी भाजपा वालों ने गंगा जल से धोकर उनका अपमान किया।

निलंबित हो सकते हैं मारपीट में शामिल डीडीयू के छात्र

दरोगा और सिपाही की कर दी थी पिटाई

संवाद न्यूज एजेंसी, गोरखपुर
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के राम प्रताप शुक्ल छात्रावास के सामने पुलिसकर्मियों से मारपीट के मामले में अब आरोपी छात्रों पर निलंबन की कार्रवाई हो सकती है। पुलिस ने विश्वविद्यालय प्रशासन को पत्र लिखकर कार्रवाई की सिफारिश की है।

इसके तहत उन्हें हॉस्टल से निष्कासित और विश्वविद्यालय से निलंबित किया जा सकता है। विश्वविद्यालय प्रशासन इस पूरी घटना की समीक्षा कर रहा है। पुलिस ने डीडीयू प्रशासन को लिखे पत्र में पांच मई को हुई घटना का पूरा विवरण दिया है।

इस मामले को लेकर बुधवार को छात्र आरपीएस छात्रावास के वार्डन प्रो. गोपाल प्रसाद के साथ कुलपति कार्यालय पहुंचे। वहां विद्यार्थियों ने बताया कि इनमें से कुछ छात्र घटना में शामिल नहीं थे। उन्हें फर्जी तरीके से फंसाया गया है।

सम्पादकीय

लोकसभा के इस चुनाव में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जहां एक ओर अत्यंत गरिमाहीन व अमर्यादित भाषण दे रहे हैं

अदानी-अंबानी पर मोदी और फंसे

लोकसभा के इस चुनाव में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जहां एक ओर अत्यंत गरिमाहीन व अमर्यादित भाषण दे रहे हैं, वहीं उनके बयान एकदम तथ्यहीन भी होते हैं जो देश के लिये आश्चर्य कम और झटके अधिक साबित हो रहे हैं। वैसे तो श्री मोदी जब से देश के राजनीतिक क्षितिज पर उभरे हैं, अपने वक्तव्यों से वे झूठ के अंबार खड़े कर रहे हैं। दो कार्यकाल के जरिये दस साल का शासन लगभग पूरे कर चुके प्रधानमंत्री ने जितने असत्य व अर्द्ध सत्य कहे हैं, उसकी चाहे जितनी बड़ी फेहरिस्त बना ली जाये, कई झूठ छूट ही जायेंगे। कई लोगों का मानना है कि तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने के लिये अति व्यग्र मोदी तीन चरण के हो चुके मतदान के बाद अपनी साफ दिखती पराजय से इतने खौफ खाये बैठे हैं कि उन्होंने लोगों को प्रभावित करने के लिये अपने भाषणों में झूठ का तड़का बढ़ा दिया है। हालांकि उसकी मात्रा कुछ ऐसी ज्यादा हो चली है कि अब ये भाषण बेस्वाद व कड़ुए हो चले हैं।

विपक्ष, खासकर कांग्रेस पर वे अधिक हमलावर होते हैं। 'कांग्रेस मुक्त भारत' के नारे के साथ दिल्ली की गद्दी पर 2014 में विराजमान हुए मोदी ने 2019 में कहीं बड़ा बहुमत हासिल किया था। इससे ताकतवर बने मोदी के सामने अब बड़ा लक्ष्य था 'विपक्ष मुक्त भारत' बनाने का जिसके लिये भारतीय जनता पार्टी ने तमाम अनैतिक उपाय किये। इनमें विरोधी दलों की सरकारों को गिराने से लेकर विपक्षियों को डरा–धमकाकर या खरीदकर अपने खेमे में लाना शामिल था। उन्हें भी भाजपा में शामिल किया गया जिन पर उसकी ओर से भ्रष्टाचार या परिवारवाद के आरोप लगाये जाते रहे हैं। इसकी भी बहुत बड़ी सूची है। इस 'ऑपरेशन लोटस' के चलते देश का संघीय ढांचा ही नहीं वरन पूरी की पूरी लोकतांत्रिक प्रणाली ही ध्वस्त कर दी गई। विपक्ष के कमजोर होने से मोदी सतत मजबूत होते चले गये। उन्होंने खुद को एकमात्र विकल्प बनाये रखने के लिये प्रतिपक्ष के साथ ही खुद की पार्टी को भी अपनी मुठ्ठी में कर लिया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भी उनके सामने एक नहीं चलती, जिसके कार्यकर्ता के रूप में खुद उनका सार्वजनिक जीवन शुरू हुआ था।

दूसरी ओर दस वर्षों में देश की संसद के साथ सभी संवैधानिक संस्थाओं को किस कदर कमजोर कर दिया गया– यह हर कोई देख रहा है। सारे फैसले चुनिंदा लोगों के हित में लिये जा रहे हैं। देश के सार्वजनिक उपक्रम कौड़ियों के मोल प्रधानमंत्री के कारोबारी मित्रों के नाम चढ़ चुके हैं। प्रतिरोध की आवाजें उठनी ही बन्द हो गई थीं। विरोधी सांसदों समेत अपने खिलाफ़ उठने वाली हर आवाज़ को मोदी कुचलते चले गये। संसद के भीतर जनविरोधी फैसले कभी विरोधियों की अनुपस्थिति में तो कभी बिना चर्चा के, कभी अध्यादेशों के द्वारा या फिर सामान्य आदेशों के माध्यम से लिये गये। सभी राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक शक्तियां नरेंद्र मोदी ने अपनी जेबों में डाल दी हैं। देश में जातिवाद व साम्प्रदायिकता का चरम तो दिख ही रहा है, पूंजीवाद भी अपने उत्कर्ष पर है। प्रधानमंत्री मोदी के परम मित्र गौतम अदानी एवं मुकेश अंबानी को जिस मनमाने ढंग से भाजपा सरकार द्वारा फायदा पहुंचाया गया, उसकी गूंज देश के भीतर ही नहीं वरन विदेशों में भी पहुंच चुकी है।

सितम्बर, 2022 के बाद समय ने पलटना शुरू किया जब राहुल गांधी ने कन्याकुमारी से श्रीनगर की पैदल यात्रा निकाली। इससे जहां एक ओर राहुल की वह छवि ध्वस्त हो गई जो भाजपा के आईटी सेल द्वारा करोड़ों रुपये खर्च कर बनाई गई थी, तो वहीं दूसरी तरफ़ कांग्रेस पुनर्जीवित हो उठी। बड़ा परिवर्तन वह आया जिसका लोकतांत्रिक मूल्यों में भरोसा रखने वाली अवाम बेसब्री से इंतज़ार कर रही थी– विपक्षी एकता की राह प्रशस्त हो गई। इस यात्रा के दौरान राहुल ने देश का विमर्श बदल डाला। एक तरफ़ तो जनसरोकार के मुद्दे केन्द्र में लौट आये वहीं केन्द्र सरकार की विफलताएं तथा मोदी के अदानी–अंबानी से रिश्ते भी जगजाहिर हो गये। राहुल व कांग्रेस ने संसद के भीतर बड़ी कीमत चुकाकर अदानी के साथ मोदी के सम्बन्धों की आवाज़ उठाई। इसी साल 14 जनवरी को मणिपुर से निकलकर 18 मार्च को मुम्बई में समाप्त हुई राहुल की 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' ने सरकार की चूलें हिला दीं। उद्योगपतियों के साथ अपने रिश्तों व उनके लिये काम करने वाली अपनी नीतियों के कारण मोदी बेपर्दा हो गये।

पराजय के डर से इस चुनाव प्रचार के दौरान मोदी के भाषण जहां एक ओर ध्रुवीकरण को बढ़ावा देने वाले साबित हो रहे हैं वहीं वे राहुल पर अधिक हमलावर हो रहे हैं।उन पर अदानी–अंबानी को लेकर हुए हमलों पर अब तक चुप्पी साधने वाले मोदी ने पहली बार इन दोनों उद्योगपतियों के नाम जिस हास्यास्पद व विसंगतिपूर्ण ढंग से लिये उससे वे और भी फंसते चले गये। तेलंगाना के करीमनगर में उन्होंने कहा– 'पहले तो कांग्रेस के शहजादे (आशय– राहुल गांधी) दिन में कई बार अदानी–अंबानी का नाम जपते थे। इस चुनाव प्रचार में उन्होंने इन उद्योगपतियों के नाम लेने क्यों बन्द कर दिये? क्या रातों–रात कोई डील हो गई या उन तक बोरों में नोट पहुंच चुके हैं?' स्वाभाविक प्रतिक्रियास्वरूप कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने बताया कि राहुल ने अदानी का 103 बार और अंबानी का 30 बार नाम लिया। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने ट्विट किया है कि 'दोस्त दोस्त न रहा।' वैसे इस बयान से मोदी ने खुद पर उंगली उठा दी है। देखना होगा कि आगे के चार चरणों में नरेंद्र मोदी के इस बयान से भाजपा को मदद मिलती है या फिर मुसीबत में पड़ती है।

एक ही मुखड़े पर अटके मोदी के सुर

भाजपा और इंडिया गठबंधन के बीच हो रहे मुकाबले में अब तक बसपा किसी के साथ नहीं थी

भाजपा और इंडिया गठबंधन के बीच हो रहे मुकाबले में अब तक बसपा किसी के साथ नहीं थी, लेकिन मंगलवार को बसपा सुप्रीमो मायावती ने अचानक अपने उत्तराधिकारी और पार्टी संयोजक आकाश आनंद को उनके दायित्वों से मुक्त कर दिया। मायावती ने आकाश आनंद की अपरिपक्व बताते हुए यह फैसला लिया। जबकि इस बार आकाश आनंद का बसपा के लिए प्रचार काफी सुर्खियां बटोर रहा था। देश में सात चरणों में हो रहे मतदान में तीन चरण पूरे हो चुके हैं और अब बचे चार चरणों के लिए राजनैतिक दलों के प्रचार जोरों पर हैं। दूसरे चरण के मतदान 26 अप्रैल को हुए थे और तीसरे चरण के 11 दिन बाद 7 मई को, इन 10–11 दिनों के अंतराल में राजनैतिक घटनाक्रम में तेजी से बदलाव आए। कांग्रेस ने अमेठी और रायबरेली सीटों पर अपने प्रत्याशियों की घोषणा कर दी। राहुल गांधी एक बार फिर से उत्तरप्रदेश से उम्मीदवारी के लिए तैयार हुए। कांग्रेस ने उन्हें अपनी मां सोनिया गांधी की संसदीय सीट को संभालने का जिम्मा सौंपा है, वहीं उनकी पहले की सीट अमेठी से कांग्रेस ने इस बार गांधी परिवार के नजदीकी के एल शर्मा को खड़ा किया है। प्रियंका गांधी अपने भाई राहुल और राजनैतिक सहयोगी के एल शर्मा के लिए जमकर प्रचार कर रही हैं। बीते सोमवार 6 मई से प्रियंका अमेठी और रायबरेली में हैं और 18 मई तक उनका यहीं रहने का इरादा है। 20 मई को पांचवे चरण के मतदान में अमेठी और रायबरेली की सीटें भी शुमार हैं। कांग्रेस इस बार अपनी इन दोनों सीटों को फिर से हासिल करने की तैयारी में है। भाजपा को उम्मीद नहीं थी कि कांग्रेस उत्तरप्रदेश में कुछ ऐसा दांव खेल जाएगी, क्योंकि भाजपा ने अमेठी को अपने लिए सुरक्षित सीट मान लिया था और सोनिया गांधी की गैरमौजूदगी में रायबरेली पर भी कब्जा करने की तैयारी उसकी थी। लेकिन कांग्रेस ने एक तीर से इस बार कई शिकार कर लिए। राजनैतिक विश्लेषकों का मानना है कि अमेठी में स्मृति ईरानी के लिए अब जीतना कठिन हो गया है और हारने पर उनके सियासी भविष्य के लिए संकट होगा, क्योंकि जनता के बीच संदेश जाएगा कि वे कांग्रेस के एक साधारण कार्यकर्ता से हार गईं। वहीं रायबरेली से भी अगर राहुल गांधी की जीत होती है तो फिर वे वायनाड या रायबरेली किसी एक सीट को छोड़ सकते हैं और मुमकिन है उसके उपचुनाव में प्रियंका गांधी को खड़ा कर दिया जाए।

इस तरह कांग्रेस के लिए हर तरफ से जीत है, जबकि भाजपा के लिए इसमें नुकसान है। अमेठी में कांग्रेस के पक्ष में बन रहे इस माहौल के बीच ही रविवार रात कांग्रेस कार्यालय के बाहर खड़ी गाड़ियों में तोड़–फोड़ की गई और कुछ लोगों को चोट भी पहुंचाई गई है। यह कृत्य किसका है, फिलहाल इसकी जांच ही चल रही है, लेकिन अमेठी में इससे पहले कभी इस तरह चुनावों के वक्त किसी राजनैतिक दल पर हमले की घटनाएं नहीं हुई हैं। इस बार क्यों हुई हैं, यह विचारणीय है। अमेठी और रायबरेली में कांग्रेस की बढ़त बनाने की रणनीति के साथ–साथ हरियाणा से भी भाजपा के लिए अच्छी खबर नहीं आई। वहां तीन निर्दलीय विधायकों दादरी से सोमबीर सांगवान, पुंडरी से रणधीर गोलन और धर्मपाल गोंधर ने कांग्रेस को समर्थन देने का फैसला किया और भाजपा की सरकार से हाथ पीछे खींच लिए, जिसके बाद नायब सिंह सैनी की सरकार अल्पमत में आ गई है। इन पंक्तियों के लिखे जाने तक जेजेपी के दुष्यंत चौटाला ने भी कांग्रेस को साथ देने की बात कही है ताकि वह सरकार बना सके। यानी भाजपा से एक और राज्य की सत्ता जा सकती है। वहीं तीसरे चरण के मतदान के दिन ही महाराष्ट्र में एनसीपी नेता शरद पवार ने बयान दिया कि कुछ क्षेत्रीय दल कांग्रेस में खुद को मिला सकते हैं और उसका समर्थन कर सकते हैं। इससे पता चलता है कि अब कांग्रेस के बढ़ते कद को दूसरे नेता भी स्वीकार करने लगे हैं।

इधर उत्तरप्रदेश में तीन चरणों के मतदान के बाद खबरें आ रही हैं कि भाजपा को इस बार इंडिया गठबंधन से कड़ी टक्कर मिली है। जिस राज्य में भाजपा अपनी जीत का बड़ा आधार मान रही थी, वहां से उसे झटका मिला है। भाजपा और इंडिया गठबंधन के बीच हो रहे मुकाबले में अब तक बसपा किसी के साथ नहीं थी, लेकिन मंगलवार को बसपा सुप्रीमो मायावती ने अचानक अपने उत्तराधिकारी और पार्टी संयोजक आकाश आनंद को उनके दायित्वों से मुक्त कर दिया। मायावती ने आकाश आनंद की अपरिपक्व बताते हुए यह फैसला लिया। जबकि इस बार आकाश आनंद का बसपा के लिए प्रचार काफी सुर्खियां बटोर रहा था। लंदन से पढ़ाई करके आने के बाद अपनी बुआ की राजनैतिक विरासत को आगे बढ़ाने और दलितों के लिए राजनैतिक सत्ता की बात करने वाले आकाश आनंद अपने भाषणों में भाजपा पर तीखे प्रहार कर रहे थे। उनके भाषणों में वह धार मतदाताओं को दिख रही थी, जिसकी उम्मीद अब तक बहनजी से की जाती रही, लेकिन कई बरसों से निराशा ही मिल रही थी। दलितों से जुड़े अनेक गंभीर मामलों में बहनजी की चुप्पी उनके समर्थकों को अखर रही थी, लेकिन आकाश आनंद के कारण उनमें नया जोश भरा था। ऐसे में बसपा के लिए सीटें बढ़वाने की गुंजाइश बन रही थी, लेकिन शायद भाजपा की नाराजगी को भांपते हुए मायावती ने ऐसा फैसला ले लिया।

तीसरे चरण के मतदान के दौरान और उससे पहले हुई इन सियासी घटनाओं के बीच ब्रिटेन में एस्ट्राजेनेका फार्मा कंपनी ने अदालत में स्वीकार किया कि उसकी बनाई कोरोना वैक्सीन के घातक साइड इफेक्ट हो सकते हैं। इसके बाद कंपनी ने दुनिया भर में भेजी गई अपनी वैक्सीन को वापस मंगाने का फैसला भी लिया। इसी कंपनी के फार्मूले पर भारत में कोविशील्ड बनी थी और वैक्सीन प्रमाणपत्र पर मोदीजी की तस्वीरें तो होती ही थीं। लेकिन अब सरकार ने वैक्सीन के प्रमाणपत्र से नरेन्द्र मोदी की फोटो हटा ली है। इसका मतलब यह समझा जा सकता है कि इलेक्टोरल बॉड के खुलासे की तरह कोविशील्ड के साइड इफेक्ट की बात से पर्दा उठना भाजपा के लिए महंगा पड़ चुका है।

प्रधानमंत्री मोदी के भाषणों में भी पहले चरण से लेकर तीसरे चरण तक कई बदलाव आ गए, हालांकि उसका मुखड़ा एक ही रहा। कांग्रेस की आलोचना करना श्री मोदी के भाषणों का स्थायी मुखड़ा रहता है और अंतरे में मंगलसूत्र, भैंस, राम मंदिर, बाबरी ताला अपनी सुविधा से लाते रहते हैं। लेकिन बुधवार को उनके अंतरे ने सभी को चौंका दिया। इस बार अपने भाषण में प्रधानमंत्री मोदी ने कांग्रेस और राहुल गांधी पर आरोप लगाया कि अडाणी, अंबानी का नाम अब वो नहीं ले रहे हैं, क्या उनके पास बोरियों में काला धन पहुंच गया है। प्रधानमंत्री के तेलंगाना में दिए इस भाषण के बाद प्रतिक्रियाओं का ढेर लग गया और सबमें लगभग एक जैसी ही राय दिखी कि क्या अब नरेन्द्र मोदी पर हार का डर इतना हावी हो गया है कि वे अडाणी–अंबानी के बारे में कह रहे हैं उन्होंने कांग्रेस की मदद की है।

दस सालों में प्रधानमंत्री मोदी को मुकेश अंबानी और गौतम अडाणी के साथ नजदीकी संबंध निभाते तो कई बार देखा गया, लेकिन इस दौरान विपक्ष ने जब भी सवाल उठाए कि देश की सार्वजनिक संपत्ति, सारे संसाधनों पर केवल दो लोगों को हक क्यों दिया जा रहा है। विकास का ये कौन सा गुजरात मॉडल है। आखिर श्री मोदी इन दो उद्योगपतियों पर इतने मेहरबान क्यों हैं। तो इन सवालों का कोई जवाब नरेन्द्र मोदी ने नहीं दिया। उन्होंने दावा किया था कि काला धन वापस ले आएंगे और नोटबंदी का मकसद भी यही था। लेकिन अब वे कह रहे हैं कि इन उद्योगपतियों से कांग्रेस को काला धन मिला है। यानी प्रधानमंत्री मोदी अपनी विफलता के साथ–साथ देश की जांच एजेंसियों की कार्यशैली पर भी सवाल उठा गए। इलेक्टोरल बॉड के साथ शुरु हुए इस बार के चुनावी सफर में अब वो मुकाम आ गया है जहां नरेन्द्र मोदी अडाणी–अंबानी को अपने भाषण का हिस्सा बना रहे हैं। इस सफर में अभी कई मोड़, कई ऊंचे–नीचे रास्ते आना बाकी हैं। देखना होगा कि श्री मोदी के भाषणों में कांग्रेस और गांधी परिवार की आलोचना के अलावा जनता से जुड़े मुद्दे भी शामिल होते हैं या उनके सियासी सुर एक ही मुखड़े पर अटके रहेंगे।

तय हुआ आधा सफर

देश में लोकसभा चुनाव का तीसरा चरण मंगलवार को संपन्न हो गया। कहने को चार चरण और बचे हैं, लेकिन कुल 283 लोकसभा क्षेत्रों में मतदान हो चुका है, जबकि बहुमत का जादुई आंकड़ा 272 है। ऐसे में कहा जा सकता है कि हम मध्य अप्रैल से लेकर जून के पहले सप्ताह तक फैले इस चुनावी सफर का आधा रास्ता तय कर चुके हैं। मत प्रतिशत का सवाल : इस बार अब तक के चुनावों का सबसे दिलचस्प पहलू मतदान प्रतिशत साबित हुआ है। शुरुआती दोनों दौर में वोटिंग 2014 और 2019 के लोकसभा चुनावों के मुकाबले कम रही। तीसरे चरण में भी यह ट्रेंड बदलता नहीं दिखा। हालांकि चुनाव आयोग के आधिकारिक आंकड़े आने में अभी वक्त है, फिर भी शुरुआती आंकड़ों के मुताबिक कुछ खास राज्यों और चुनाव क्षेत्रों में भले वोट प्रतिशत कुछ ज्यादा हो, राष्ट्रीय औसत देखते हुए कहा जा सकता है कि मतदाताओं में कोई अतिरिक्त उत्साह इस बार भी नजर नहीं आया। परस्पर विरोधी व्याख्याएं : यह तथ्य दिलचस्प इसलिए भी बन गया है कि सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों खेमे इसकी अपने मुताबिक व्याख्या करते हुए इसे जीत के अपने दावे का आधार बना रहे हैं। सत्तारूढ़ छक। का कहना है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की व्यक्तिगत लोकप्रियता को ध्यान में रखें तो साफ हो जाता है कि ठश्रच और सहयोगी दलों के समर्थक मतदाता पहले की तरह वोट दे रहे हैं। वे इसमें ठश्रच की चुस्त चुनावी मशीनरी की भूमिका को भी रेखांकित करते हैं। इसके विपरीत विपक्षी खेमे का कहना है कि 2014 और 2019 के चुनावों को मोदी समर्थक मतदाताओं के उत्साह ने ही खास बनाया था। इस बार लोगों में वैसा जोश नहीं है। वे कहते हैं कि यह तथ्य जैसे वोटिंग प्रतिशत में नजर आया है, वैसे ही रिजल्ट में भी दिखेगा। प्रचार शैली में बदलाव : इस चुनाव प्रक्रिया की जीवंतता का एक उदाहरण यह भी है कि अब तक के दौरों में वोटरों के रेस्पॉन्स के आधार पर विभिन्न दलों की प्रचार शैली में खास बदलाव दिख रहा है। पहले और दूसरे चरण के बाद चुनाव प्रचार ज्यादा तीखा होता दिखा। न केवल राजनीतिक दल एक–दूसरे को लेकर ज्यादा आक्रामक हुए बल्कि ऐसे मुद्दों पर उनका जोर बढ़ा जो आम मतदाताओं को उद्वेलित करके उन्हें चुनाव बूथों तक जाने को प्रेरित करे। दुनिया की निगाहें : भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में हर चुनाव ही खास होता है, फिर भी ये चुनाव विशेष रूप से देश–विदेश का ध्यान खींच रहे हैं तो उसकी वजह यह भी है कि विपक्ष ने इस बार लोकतंत्र को भी चुनावी मुद्दा बना दिया है। दूसरी ओर सत्ता पक्ष भी पीछे न रहते हुए यह आरोप लगा रहा है कि विदेशी ताकतें इन चुनाव नतीजों को प्रभावित करने की कोशिश में हैं। खैर, इन सब पर जनता क्या सोचती है, यह तो 4 जून को नतीजों के आने पर ही पता चलेगा।

नेपाल ने नए नोट से छेड़ा सीमा विवाद लेकिन हकीकत नहीं बदलेगी

पड़ोसी देश नेपाल के साथ सीमा पर कुछ क्षेत्रों को लेकर विवाद नई बात नहीं है, लेकिन जिस तरह से नेपाल सरकार ने सौ रुपये के नए नोट पर इन विवादित क्षेत्रों को अपने देश का हिस्सा दिखाने वाला नक्शा छापने का फैसला किया है, वह वाकई चौंकाने वाला है।

संबंधों में उतार–चढ़ाव

नेपाल भारत के सबसे करीबी पड़ोसी देशों में शामिल है। इसकी 1850 किलोमीटर से भी लंबी सीमा भारत के पांच राज्यों से मिलती है।

दोनों देशों के बीच सामाजिक और सांस्कृतिक रिश्तों की भी जड़ें काफी गहरी हैं। बावजूद इसके, पिछले कुछ समय से दोनों देशों के संबंधों में खासा उतार–चढ़ाव देखने को मिला है।

तीन क्षेत्रों पर विवाद

अगर सीमा संबंधी इसी मसले को देखा जाए तो चार साल पहले दोनों देशों के बीच यह मुद्दा काफी गरमा गया था। साल 2020 में तत्कालीन केपी ओली सरकार ने जब देश का नक्शा अपडेट किया तो उसमें तीन क्षेत्रदृ लिपुलेख, लिपियाधुरा और कालापानी दृ नेपाल के हिस्से के रूप में दिखाए गए थे।

संवाद बंद

मामला तब और भड़का जब भारत ने 8 मई 2020 को लिपुलेख होते हुए मानसरोवर की ओर जाने वाली सड़क का उद्घाटन किया।

नेपाल ने इस पर कड़ी आपत्ति की जबकि उत्तराखंड के पिथौरागढ़ से होकर जाती हुई यह सड़क पूरी तरह भारत के इलाके में पड़ती है। उस वक्त नेपाल सरकार ने नक्शे में बदलाव को मजबूती देने के लिए इसके पक्ष में संविधान संशोधन विधेयक भी पारित किया था।

मामला इतना बढ़ गया कि दोनों देशों में अस्थायी तौर पर संवाद बंद कर दिया गया।

स्वामी प्रसाद मौर्य ने किया नामांकन

संवाद न्यूज एजेंसी, कुशीनगर। लोकसभा चुनाव के लिए चल रहे नामांकन के तीसरे दिन राष्ट्रीय शोषित समाज पार्टी के अध्यक्ष स्वामी प्रसाद मौर्य ने नामांकन पत्र दाखिल किया। उन्होंने तीन सेट में नामांकन किया है। नामांकन करने के बाद वह पडरौना शहर के एक होटल में आयोजित आरएसएसपी के कार्यकर्ता सम्मेलन में पहुंचे।

उन्होंने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा सरकार संविधान विरोधी है। वह आरक्षण को खत्म करना चाहती है। यह चुनाव बाबा साहब डॉ. आंबेडकर के सपनों व उनके विचारों को बचाने का चुनाव है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की वादा खिलाफी को देश की जनता अच्छी तरह जान गई है।

पूंजीपतियों व सामंतवादियों को बढ़ावा देने वाली इस सरकार ने आम आदमी का जीना दुश्वार कर दिया है। देश में बढ़ती महंगाई व बेरोजगारी ने देश की अर्थव्यवस्था को बदहाली की कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है।

पर्यावरण का रखरखाव सभी के लिए आवश्यक

बेला कांटा [redacted] क्षेत्र के ग्राम सभा नथुआ स्थित कम्पोजिट प्राथमिक विद्यालय पर एक कृषक गोष्ठी का आयोजन किया गया तथा छात्रों में कला और निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया तथा प्रतियोगिता में भाग लिए बच्चो को पुरस्कृत किया गया।

■ कम्पोजिट प्राथमिक विद्यालय नथुआ में कृषक गोष्ठी का आयोजन

भारत सरकार कृषि एवं कल्याण विभाग के अधीन वनस्पति संरक्षण अन्तर्राष्ट्रीय पादप स्वस्थ दिवस का आयोजन किसानो के वीच किया गया इस आयोजन में किसानों को पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए पौधे लगाने की सलाह दिया गया। कृषि वैज्ञानिक अतुल कुमार सिन्हा ने मित्र व शत्रु कीट के वारे में विस्तृत रूप से वताया गया। केंद्र के प्रभारी अधिकारी राजेन्द्र कुमार व कृषि वैज्ञानिक वासव राज कुमार ने कीटनाशक दवाओ के उपयोग के वारे मे जानकारी दिये। वैठक में आये वैज्ञानिक कुमारी जयन्ती ने खाद्य सुरक्षा तथा जटाशंकर पाण्डेय मनोज कुमार, श्वेता, पूनम वर्मा ने कृषि से सम्वन्धित जानकारी दिया। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य व शिक्षिकाओ ने योगदान दिया। कार्यक्रम में ग्राम प्रधान प्रतिनिधि अखिलेश चौहान, किसान विरेन्द्र प्रताप सिंह, अनिरुद्ध सिंह, राधेश्याम सिंह रामधारी सिंह, रमेश निषाद, रमाकान्त गौड़ सहित क्षेत्र के किसान उपस्थित थे।

कला व निबन्ध प्रतियोगिता में सफल बच्चों को पुरस्कृत करतीं मुख्य अतिथि।

तय समय से 10 मिनट पहले पहुंच शशांक मणि त्रिपाठी ने किया नामांकन, पहुंचने के लिए लगा दी दौड़

संवाद न्यूज एजेंसी, देवरिया । देवरिया लोकसभा क्षेत्र के भाजपा प्रत्याशी शशांक मणि त्रिपाठी पार्टी कार्यकर्ताओं और समर्थकों और काफिले के साथ 2.42 बजे कचहरी चौराहे पर पहुंचे, यहां पुलिस का बैरिकेडिंग पार जल्दी–जल्दी कलक्ट्रेट गेट पर पहुंचे। वह देर होने के कारण यहां से प्रस्तावकों के साथ दौड़ते हुए नामांकन कक्ष तक पहुंचे और नामांकन पत्र दाखिल किए।

इसके पहले प्रत्याशी शशांक मणि त्रिपाठी काफिले के साथ नामांकन करने पहुंचे थे। कलेक्ट्रट परिसर तक उनके साथ जाने के लिए समर्थक भी बेताब दिखें। इस दौरान पुलिस ने सिर्फ प्रत्याशी और उनके प्रस्तावक को अंदर जाने का अनुमति दी।

कचहरी चौराहे पर भाजपा–सपा कार्यकर्ता हो गए थे आमने–सामने, गहमागमी बढ़ी, पुलिस ने ऐसे किया काबू

गोरखपुर। लोकसभा चुनाव के नामांकन के चौथे दिन कलेक्ट्रेट के आसपास गहमागहमी बढ़ गई। दोपहर करीब 12 बजे नामांकन करने पहुंचे भाजपा प्रत्याशी कमलेश पासवान व सपा की प्रत्याशी काजल निषाद के समर्थक कलेक्ट्रेट चौक के पास आमने–सामने आ गए। दोनों तरफ से नारेबाजी होने लगी।

पुलिस ने बीच में खड़ा होकर रस्सी का घेरा बनाया और वहां से अलग हटाया। प्रत्याशी के आने के बाद समर्थक चले गए।

शुक्रवार को दोपहर करीब 12 बजे अचानक माहौल गरम हो गया। भाजपा सांसद कमलेश पासवान नामांकन करने गए। उनके समर्थक उत्साहित होकर नारे लगा रहे थे। इसी बीच सपा प्रत्याशी काजल निषाद भी नामांकन करने पहुंची। उनके इंतजार में समर्थक कलेक्ट्रेट चौराहे के पास पहुंच गए।

दोनों तरफ से नारेबाजी होने लगी। समर्थक नारे–नारे लगाते करीब पहुंच गए। उनके उग्र तेवर को देख पुलिस का हस्तक्षेप करना पड़ा। पुलिस ने दोनों दलों के कार्यकर्ताओं को अलग–अलग किया और बीच रस्सी लगाकर एक घेरा बना दिया। माइक से शांति बनाने की अपील की जाने लगी। लेकिन, कार्यकर्ता मानने को तैयार नहीं थे। काफी देर तक शोर शराबा चलता रहा। इसी बीच भाजपा प्रत्याशी कमलेश पासवान नामांकन बाहर निकल आए। उनके साथ समर्थक चले गए। कुछ देर बाद काजल निषाद भी आ गई। उनके समर्थक भी नारे लगाते हुए साथ गए। इसके बाद पुलिस ने राहत की सांस ली।

परशुराम जयन्ती पर असुरन स्थित श्री विष्णु मंदिर से निकाली गयी शोभायात्रा।

सत्संग पूरे जीवन को देता है शीतलता

गोरखपुर [redacted] सत्संग समिति द्वारा चल रही गीता वाटिका परिसर में सात दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा आयोजन के छठे दिन कथा व्यास पुण्डरीक गोस्वामी ने भाई जी, राधा वावा और रमदेई मैया की पुष्पांजलि के उपरांत अक्षय तृतीया के महत्व को विस्तृत रूप में वताया। श्री गोस्वामी सर्वप्रथम विष्णु मंदिर में विष्णु भगवान के अभिषेक के पश्चात, एसएस एकेडमी में सरस्वती पूजन के साथ गोरक्षनाथ मंदिर का दर्शन किया।

श्री गोस्वामी ने वताया कि रासलीला कोई सामान्य नृत्य नहीं है। यह अद्भुत ठाकुर जी की विशेष लीला है। इसको कहीं भी किसी भी जगह नहीं करना चाहिए ठाकुर जी इसे व्रज में ही करते थे। उन्होंने कहा कि रुक्मणी विदर्भ देश के राजा भीष्म की पुत्री और साक्षात लक्ष्मी जी का अवतार थी। रुक्मणी ने जव देवर्षि नारद के मुख से श्री कृष्ण के रूप, सौंदर्य एवं गुणों की प्रशंसा सुनी तो उसने मन ही मन श्री कृष्ण से विवाह करने का निश्चय किया। रुक्मणी का वड़ा भाई रुक्मी कृष्ण से शत्रुता रखता था और अपनी वहन का विवाह चेदिनरेश राजा दमघोष के पुत्र शिशुपाल से कराना चाहता था। रुक्मणी को जव इस वात का पता चला तो उन्होंने एक ब्राह्मण संदेशवाहक द्वारा कृष्ण के पास अपना परिणय संदेश भिजवाया। तव कृष्ण विदर्भ देश की नगरी कुंडीनपुर पहुंचे और वहां वारात लेकर आए

■ गीतावाटिका में श्रीमद्भागवत कथा

शिशुपाल व उसके मित्र राजाओं शाल्व, जरासंध, दंतवक्त्र, विदु रथ और पौंडरक को युद्ध में परास्त करके रुक्मणी का हरण कर लाए। वे द्वारिकापुरी आ ही रहे थे कि उनका मार्ग रुक्मी ने रोक लिया और कृष्ण को युद्ध के लिए ललकारा। तव युद्ध में कृष्ण व वलराम ने रुक्मी को पराजित करके दंडित किया। तत्पश्चात कृष्ण ने द्वारिका में अपने संवंधियों के समक्ष रुक्मणी से विवाह किया। श्रद्धालुओं ने विवाह के मंगल गीत गाए, तथा रुक्मणी विवाह उत्सव धूमधाम से मनाया गया। कथा के पूर्व 12:30 वजे से गिरिराज जी का भोग एवं प्रसाद का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

वरिष्ठ नेताओं की उपेक्षा... अखिलेश–शिवपाल में रार 2014 के बाद अपने ही घर में कमजोर होती गई सपा

समाजवादियों के गढ़ में पिछले दो संसदीय चुनावों से केसरिया पताका लहर रहा है। यहां सपा के कमजोर पड़ने की कई वजह रहीं हैं। वर्ष 2014 के लोकसभा चुनाव में मोदी लहर के चलते भारतीय जनता पार्टी ने यहां अपनी पकड़ मजबूत बना ली जो 2019 में भी बरकरार रही। सपा द्वारा मैनपुरी लोकसभा सीट को ज्यादा प्राथमिकता देना चाचा भतीजे की रार सपा की कमजोरी का कारण बने हैं।

इटावा। समाजवादियों के गढ़ में पिछले दो संसदीय चुनावों से केसरिया पताका लहर रहा है। यहां सपा के कमजोर पड़ने की कई वजह रहीं हैं। वर्ष 2014 के लोकसभा चुनाव में मोदी लहर के चलते भारतीय जनता पार्टी ने यहां अपनी पकड़ मजबूत बना ली जो 2019 में भी बरकरार रही।

सपा द्वारा इटावा लोकसभा सीट की बजाय मैनपुरी लोकसभा सीट को ज्यादा प्राथमिकता देना, चाचा भतीजे की रार, पुराने वरिष्ठ कार्यकर्ताओं की नए पदाधिकारियों द्वारा कहीं न कहीं उपेक्षा सपा की कमजोरी का कारण बने हैं।

इस लोकसभा चुनाव में चाचा शिवपाल सिंह अब सपा के साथ हैं। ऐसे में कहीं न कहीं कार्यकर्ता चुनाव में मजबूती देख रहे हैं। 2014 के चुनाव में भाजपा के अशोक दोहरे ने एक लाख 75 हजार मतों के बड़े अंतर से सपा के प्रेमदास कठेरिया को पराजित किया था।

वहीं 2019 में आगरा से अपनी चुनावी भूमि छोड़कर आए भाजपा के वरिष्ठ नेता प्रो. रामशंकर कठेरिया करीब 65 हजार मतों से चुनाव जीतकर भाजपा का परचम लहराने में कामयाब हुए।

अपने ही गढ़ में सपा को दो बार मिली हार

समाजवादी पार्टी के अपने ही गढ़ में लगातार दो बार चुनाव हारने के कारणों का अगर विश्लेषण किया जाए तो 2014 में जहां मोदी लहर ने भाजपा को संजीवनी दी वहीं 2017 के बाद मुलायम परिवार में चाचा भतीजे के बीच हुए मतभेदों ने पार्टी को काफी नुकसान पहुंचाया।

दो खेमों में संगठन व कार्यकर्ताओं के बंट जाने के कारण 2019 के लोकसभा चुनाव में सपा को नुकसान भी हुआ। हालांकि इस चुनाव में सपा बसपा का गठबंधन भी था। तब भी भाजपा अपना परचम लहराने में कामयाब रही। इस चुनाव में चाचा की पार्टी प्रसपा ने भी शंभूदयाल दोहरे को चुनाव मैदान में उतारकर वोटों का नुकसान किया था।

उस समय चाचा शिवपाल सिंह यादव के समर्थकों में मायूसी छाई और उनके खास रहे पूर्व सांसद रघुराज शाक्य, पूर्व जिला महामंत्री कृष्ण मुरारी गुप्ता, ब्लाक प्रमुख बसरेहर दिलीप यादव भाजपा में शामिल हो गए। इस चुनाव में भी पार्टी हाईकमान की उपेक्षा से नाराज पूर्व सांसद प्रेमदास कठेरिया भी भाजपा के खेमे में आ गए। इस चुनाव में सपा, बसपा के रास्ते अलग–अलग हैं।

सपा जिलाध्यक्ष प्रदीप शाक्य कहते हैं कि संगठन कतई कमजोर नहीं हुआ है।

हालांकि बड़े नेताओं के दौरे न होने को लेकर कहा कि कार्यक्रम फाइनल हो रहे हैं। आजादी के बाद से समाजवादियों का गढ़ रहा इटावा लगातार उनके लिए मुफीद रहा है।

व्यक्तिगत तौर पर कमांडर अर्जुन सिंह भदौरिया व राम सिंह शाक्य तीन बार विजयी हुए वहीं सपा से चुनाव लड़े रघुराज शाक्य भी दो बार चुनाव जीते थे।

चंदौली में बड़ा हादसा, सेप्टिक टैंक की सफाई के दौरान जहरीली गैस का रिसाव, चपेट में आने से चार लोगों मौत

संवाददाता, चंदौली। मुगलसराय के लाठ नंबर दो स्थित एक मकान में बुधवार की रात सेप्टिक टैंक सफाई के दौरान जहरीली गैस की चपेट में आकर तीन सफाईकर्मी टैंक में गिर गए। इस दौरान मजदूरों को बचाने के चक्कर में भवन स्वामी का पुत्र भी टैंक में गिर गया। घटना के बाद मौके पर मौजूद लोगों ने चारों को बाहर निकाला। इसके बाद तीन को जिला चिकित्सालय और एक को ट्रामा सेंटर ले गए, जहां चिकित्सकों ने सभी को मृत घोषित कर दिया। मौके पर पहुंची पुलिस आगे की कार्रवाई में जुट गई है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर के लाठ नंबर दो निवासी भरतलाल जायसवाल के घर पर बुधवार की रात लगभग 12 बजे कालीमहाल निवासी सफाईकर्मी विनोद रावत, कुंदन व लोहा सेप्टिक टैंक के सफाई का कार्य कर रहे थे। लोगों के अनुसार टैंक लगभग 12 फुट गहरा था। तीनों सफाईकर्मी आधा टैंक साफ कर चुके थे। इस दौरान तीनों मजदूर जहरीली गैस की चपेट में आकर एक–एक करके टैंक में गिर गए। सफाईकर्मियों को टैंक में गिरता देख भवन स्वामी का पुत्र अंकुर जायसवाल उन्हें बचाने में जुट गया। इस दौरान अंकुर भी टैंक में गिर गया।

घटना के बाद मौके पर मौजूद लोगों ने किसी प्रकार चारों को टैंक से बाहर निकला। इसके बाद एक को ट्रामा सेंटर और तीन लोगों को जिला चिकित्सालय ले गए, जहां चिकित्सकों ने सभी को मृत घोषित कर दिया । सूचना पर पहुंची पुलिस आगे की कारवाई में जुट गई। घटना से मर्माहत कालिमहाल सभासद प्रतिनिधि नितिन गुप्ता ने सफाईकर्मियों को मुआवजा दिए जाने की मांग जिला प्रशासन से की हैं।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर के लाठ नंबर दो निवासी भरतलाल जायसवाल के घर पर बुधवार की रात लगभग 12 बजे कालीमहाल निवासी सफाईकर्मी विनोद रावत कुंदन व लोहा सेप्टिक टैंक के सफाई का कार्य कर रहे थे। लोगों के अनुसार टैंक लगभग 12 फुट गहरा था। तीनों सफाईकर्मी आधा टैंक साफ कर चुके थे। इस दौरान तीनों मजदूर जहरीली गैस की चपेट में आ आकर टैंक में गिर गए।

यूपी का मौसमः पश्चिमी विक्षोभ ने गर्मी पर लगाया ब्रेक

लखनऊ। यूपी के लोगों को लू और तेज धूप से राहत मिली है। मौसम का यह बदलाव आने वाले एक–दो दिन और दिखेगा। मौसम विभाग ने इसको लेकर भविष्यवाणी की है। यूपी में मौसम थोड़ा बदल गया है। अप्रैल के दूसरे सप्ताह से शुरू हुई तीखी गर्मी के बाद बीते दो दिनों का मौसम राहत देने वाला है। बुधवार को करीब–करीब पूरे प्रदेश में लू से राहत रही। आने वाले दो दिनों में भी मौसम ऐसा रह सकता है।

प्रदेश के तराई बेल्ट, उत्तराखंड व नेपाल से सटे जिलों में पिछले 24 घंटों में हुई बारिश से लोगों को गर्मी से राहत मिली है। मंगलवार व बुधवार को प्रदेश के पूर्वोत्तर हिस्सों में तेज हवाओं के साथ मध्यम से अच्छी बारिश दर्ज की गई। सिद्धार्थनगर के ककरही में चौबीस घंटे के दौरान 14 सेंटीमीटर बारिश दर्ज हुई। गोरखपुर, महराजगंज आदि जिलों के कुछ इलाकों में गरज के साथ ओले भी पड़े। वरिष्ठ मौसम वैज्ञानिक अतुल कुमार सिंह के मुताबिक सक्रिय पश्चिमी विक्षोभ के असर से प्रदेश के तराई बेल्ट, गोरखपुर, महराजगंज, सिद्धार्थनगर, श्रावस्ती, बलरामपुर आदि इलाकों व रामपुर से सटे जिलों में अगले दो से तीन दिन तेज हवा और गरज के साथ हल्की से मध्यम बारिश की संभावना बनी हुई है। हालांकि अगले दो से तीन दिनों में इन इलाकों में अधिकतम व न्यूनतम तापमान में कोई खास बदलाव देखने को नहीं मिलेगा। जबकि पश्चिमी यूपी में आगे अधिकतम तापमान में क्रमिक वृद्धि देखने को मिलेगी।

लखनऊ में रहा मौसम सुहावना

मौसम बदलने का असर राजधानी लखनऊ में भी देखने को मिला। यहां सुबह की शुरुआत हल्की बारिश से हुई। दिन के तापमान में गिरावट हुई। ठंडी हवाएं चलने से शाम का मौसम सुहावना हो गया।

प्रतिद्वंदी रही नेहा सिंह आनंद भी भाजपा में आ चुकी है।

सियासत के चिर प्रतिद्वंद्वी हुए एक साथ

यहां बदले समीकरण... पिछले चुनावों के प्रतिद्वंद्वी इस बार एक साथ; पहले जिसे हराया अब उसे ही जिताने की कसरत

लखनऊ। यूपी की इस सीट पर उलटफेर हो गया है। यहां समीकरण बदल गए हैं। पिछले चुनावों के प्रतिद्वंद्वी इस बार एक साथ हैं। समीकरण ऐसे कि जिसे हराया अब उसे ही जिताने की कसरत की जा रही है। बदले रंग देखकर मतदाता भी खूब चटखारे लेकर इनकी चर्चा कर रहे हैं। लोकसभा चुनाव में इस बार कुछ ऐसे समीकरण बने कि बाराबंकी की राजनीति में ही उलटफेर हो गया है। पिछले कई चुनावों में सांसद, विधायक, जिला पंचायत अध्यक्ष के पद पर आमने सामने चुनाव लड़ चुके नेता इस चुनाव में एक साथ वोट मांग रहे हैं। सियासत के चिर प्रतिद्वंद्वी एक हो गए हैं। बदले रंग देखकर मतदाता भी खूब चटखारे लेकर इनकी चर्चा कर रहे हैं।

कांग्रेस के दिग्गज नेता व सांसद डॉ. पीएल पुलिया 2009 में कांग्रेस के टिकट पर सांसद बने थे। उन्होंने सपा के रामसागर रावत को हराया था। 2014 में कांग्रेस से पीएल पुनिया चुनाव लड़े तो सामने फिर सपा से रामसागर रावत ही थे। लेकिन यह चुनाव भाजपा की प्रियंका रावत ने जीता।

2019 में तब कांग्रेस ने डॉ. पीएल पुनिया के पुत्र तनुज पुनिया को उम्मीदवार बनाया तो सपा से रामसागर रावत फिर सामने थे। लेकिन चुनाव भाजपा के उपेंद्र रावत ने जीत लिया था।

लेकिन अब जब इंडी गठबंधन के तहत एक बार फिर तनुज पुनिया उम्मीदवार बनाए गए हैं तो पिता व पुत्र दोनों के प्रतिद्वंदी रहे सपा नेता रामसागर रावत तनुज पुनिया के लिए वोट मांग रहे हैं।

रामसागर व पुनिया के एक साथ मंच पर आ रहे हैं। इसी प्रकार जैदपुर विधानसभा में 2019 में उपचुनाव हुआ तो सपा से गौरव रावत, कांग्रेस से तनुज पुनिया मैदान में आए। गौरव ने तनुज को हराकर विधायकी जीत ली। 2022 में जब आम चुनाव हुए तो एक बार फिर गौरव व तनुज आमने सामने रहे लेकिन यह चुनाव भी सपा के गौरव रावत ने जीता। लेकिन वर्तमान में गठबंधन के समीकरण ऐसे हुए कि विधायक गौरव रावत स्वयं गांव गांव तनुज के लिए वोट मांग रहे हैं। इतना ही नहीं 2021 के पंचायत चुनाव में जिला पंचायत अध्यक्ष पद के लिए भाजपा से राजरानी रावत व सपा से नेहा सिंह आनंद आमने सामने थी। राजरानी चुनाव जीतकर जिला पंचायत अध्यक्ष बन गई। लेकिन अब भाजपा ने राजरानी को लोकसभा का टिकट दे दिया है।

इनकी प्रतिद्वंदी रही नेहा सिंह आनंद भी भाजपा में आ चुकी है। अब नेहा भी राजरानी के लिए वोट मांग रही हैं। 2007 में फतेहपुर विधानसभा सीट से ही कांग्रेस के नेता पीएल पुनिया ने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत की थी। इनके सामने बसपा से मीता गौतम थी। यह चुनाव मीता गौतम ने जीता था। लेकिन वर्तमान में मीता कांग्रेस में शामिल होकर श्री पुनिया के साथ वोट मांग रही हैं। कई जिला पंचायत सदस्यों व नेताओं के साथ कुछ ऐसा ही हुआ है।

कोई वापस लौटा तो किसी ने बदल दी पार्टी

लोकसभा चुनावों की सरगर्मियों के बीच बाराबंकी में कई दिलचस्प वाक्ये भी हुए। जैसे बसपा की फतेहपुर से बसपा विधायक रही मीता गौतम ने कांग्रेस का दामन थाम लिया। विधानसभा चुनावों में सपा में शामिल होने वाले भाजपा नेता सिद्धार्थ अवस्थी भाजपा में वापस लौट चुके हैं।

इतना ही नहीं कई नगर पंचायतों में भाजपा से बागी होने वाले लोग जहां वापस लौट आए हैं वहीं बसपा से रामनगर, दरियाबाद व हैदरगढ़ का विधानसभा चुनाव लड़ने वाले तीन नेता भी अब भाजपा का दामन थाम चुके हैं।

असल परीक्षा 'बड़े-बड़ों' की

अयोध्या।

यहां पूरे लोकसभा चुनाव परिदृश्य पर नजर दौड़ायें और उसे देखकर सच बतायें तो असल परीक्षा 'बड़े-बड़ों' की है। यानी मोदी-योगी, राहुल-अखिलेश और प्रियंका-डिंपल की। ये वे चेहरे हैं जिनकी चमक के अक्स तले भाजपा हो या फिर इंडिया गठबंधन के खेवइया, दोनों अपना-अपना बेड़ा पार लगाने की जुगत भिड़ाने में लगे हैं। यहां लगातार दो बार मोदी का सिक्का चल चुका है। अब तीसरी बार भी उसी को उछाला गया है। इस बार परिस्थितियां पहले से भिन्न हैं। भाजपा के पास अयोध्या के कायाकल्प की उपलब्धियां हैं, राम मंदिर है और इसकी रोशनी में विस्तार पा रही भारतीय संस्कृति।

फैजाबाद संसदीय क्षेत्र

- भाजपा प्रत्याशी को मोदी-योगी का सहारा
- अयोध्या में रोड शो कर मोदी खींच गये लंबी लकीर
- सपा-कांग्रेस गठबंधन को राहुल-प्रियंका, अखिलेश-डिंपल का इंतजार

रामनगरी की त्रेतायुगीन पौराणिक गाथाओं को धरातल पर उतारकर उसे विकास के अधुना ढांचे में करीने से सजाने का शोर है- 'अयोध्या बदल रही है, कुछ कदम आगे बढ़कर चल रही है तो इसके आगे-पीछे मोदी-योगी के डबल इंजन की शक्ति का ही कमाल है।' चुनाव में इसका करिश्मा दिखाने के लिये दोनों शीर्ष नेताओं ने कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी है।

चुनाव के ऐन मौके पर मोदी ने रामलला का आशीर्वाद लेकर अयोध्या धाम के भीतर रोड शो के माध्यम से जो लंबी लकीर खींची है, उससे पार पाना रस्सी पर चलने जैसा है। इसके लिये सपा-कांग्रेस गठबंधन ने अपनी चाल की गति बढ़ाते हुए पहले की तुलना में रणनीति भी बदली है।

गांव-गरीब-मजदूर-किसान-युवा-बेरोजगार-नौजवान और व्यापारियों के मान-सम्मान पर उसका मुख्य फोकस है। यहां ये मुद्दे जमीन पर पड़े हैं। इनमें पंख लगाकर चुनाव मैदान पर उड़ाने की पुरजोर कोशिशें चल रही हैं। हवा का रुख इसी इर्द-गिर्द मोड़ा जा रहा है। शिक्षा-स्वास्थ्य और चूल्हे-चौके का स्वाद बिगाड़ रही महंगाई की मार का अस्त्र भी चलाया जा रहा है। जाहिर बात है कि यह सबकुछ आम आदमी दिन-रात झेल रहा है। इस पर धार चढ़ाने के लिये उसे अपने 'बड़ों' की दरकार है। इस समय प्रत्याशी के चुनावी चेहरे की आभा बढ़ाने के लिये राष्ट्रीय नेताओं का इंतजार हो रहा है।

इस संसदीय क्षेत्र की पांच विधानसभाओं में से चार-अयोध्या, गोसाईगंज, सोहावल और दरियाबाद पर भाजपा का कब्जा है। सिर्फ मिल्कीपुर (सु) ही सपा के हाथ में हैं। इन चारों विधानसभाओं को एक साथ जोड़कर देखें तो राम और मोदी के प्रभाव में दो बार से लगातार सांसद बनते आ रहे भाजपा प्रत्याशी लल्लू सिंह को घेरने में पसीने छूटना बड़ा स्वाभाविक है। लेकिन, इस बड़ी चुनौती को लेकर सपा गठबंधन प्रत्याशी अवधेश प्रसाद इस भरोसे के साथ आगे बढ़ रहे हैं कि आमजनता अपनी जरूरतें पूरी करने के लिये जिस तरह खट रही है, उसकी दुखती रग पर हाथ रखकर, सुनहरा भविष्य बनाने का संकल्प दिखाकर अपनी तरफ पलझाया जा सकता है। इसे सफल बनाने के लिये सपा-कांग्रेस गठबंधन ने चुनाव की नई युक्ति निकाली है।

राष्ट्रीय नेताओं को मैदान में उतारकर चुनावी बाजी अपने पक्ष में मोड़ने के लिये चुनाव मैदान में डटे भाजपा के लल्लू सिंह हों या विरोध में ताल ठोंक रहे अवधेश प्रसाद, दोनों ही सियासत में बड़े रणनीतिकार माने जाते हैं। दोनों का लंबा राजनीतिक अनुभव है। चुनाव दर चुनाव एक से बढ़कर एक उतार-चढ़ाव भी देखे हैं।

इन दोनों की राजनीतिक कद-काठी का नेता फिलहाल जिले में कोई अन्य दिखता नहीं। ऐसे में सज रहा चुनावी दंगल बड़ा ही दिलचस्प होने वाला है। भाजपा इस बार पिछले चुनाव की तुलना में अपने जीत का अंतर बढ़ाने का लक्ष्य साधने में लगी है तो विपक्ष उसके मंसूबे पर पानी फेरना चाहता है। दोनों एक-दूसरे को चित करने के लिये अपने-अपने हथकंडे आजमाने में लगे हैं।

इस चुनाव में नोटों की जगह 'मौत के सामान' की हुई रिकार्ड सप्लाई

नकदी केवल 34 करोड़ ही सीज, 238 करोड़ की...

लखनऊ। इस चुनाव में नोटों की जगह ड्रग्स की रिकॉर्ड सप्लाई हुई है। अब तक 238 करोड़ रुपये की ड्रग्स पकड़ी गई है। नकदी केवल 34 करोड़ ही सीज हुई है। दो हजार के नोट बंद होने के बाद चुनाव में ड्रग्स ने कालेधन की जगह ले ली। इसे चुनाव आयोग की सख्ती का असर ही कहेंगे कि इस बार चुनाव में इस्तेमाल होने वाले कालेधन का रूप ड्रग्स ने ले लिया है। दो हजार रुपये के नोट बंद होने के बाद कैश लाना–ले जाना खतरों से भरा है। यही वजह है कि इस चुनाव में नोटों की जगह ड्रग्स ने ले ली है। ये पहला चुनाव है, जिसमें प्रदेश में ही 238 करोड़ रुपये की ड्रग्स पकड़ी जा चुकी है और नकदी केवल 34 करोड़ ही सीज हुई है।

लोकसभा चुनाव की आचार संहिता 16 मार्च को लगी थी। चुनाव आयोग की 'मनी पावर वाच टीम' ने महज 13 अप्रैल तक ही 4650 करोड़ रुपये की नकदी, शराब, ड्रग्स आदि सीज की, जो 75 साल के संसदीय चुनाव के इतिहास में सबसे ज्यादा था। इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि 2019 के लोकसभा चुनावों के सातों चरणों में 3475 करोड़ रुपये सीज किए गए थे।

गंभीर बात ये है कि कुल जब्त की गई राशि में से करीब आधी ड्रग्स और कोकीन जैसे घातक मादक पदार्थों के रूप में है। पिछले चुनाव की तुलना में इस बार ड्रग्स की जब्ती सबसे ज्यादा है। पिछले पूरे चुनाव के दौरान देशभर में जहां 1239 करोड़ की ड्रग्स पकड़ी गई थी। वहीं इस बार केवल तीन चरणों के चुनाव में यूपी में ही 238 करोड़ की ड्रग्स सीज की जा चुकी है।

वहीं कैश की जब्ती पिछले चुनाव के मुकाबले आधी से भी ज्यादा घट गई। पकड़ी गई ड्रग्स में अफीम, चरस, गांजा से लेकर ब्राउन शुगर तक शामिल हैं। इनकी कीमत 50 हजार रुपये से लेकर दो करोड़ रुपये किलो तक है। सूत्रों के मुताबिक कैश के बजाय ड्रग्स की धरपकड़ में अप्रत्याशित तेजी की मुख्य वजह दो हजार रुपये के नोट हैं, जो बंद कर दिए गए हैं।

उनके मुताबिक पहले चुनाव में इस्तेमाल होने वाले कालेधन को पहुंचाने का जरिया दो हजार के नोट थे। केवल दस गड्डी में ही बीस लाख आसानी से पहुंच जाते थे। पांच सौ के नोटों को लाखों–करोड़ों में ले जाना खतरे से खाली नहीं है।

इस बार आयोग की टीमें डाटा इंटेलीजेंस और तकनीक के आधार पर ज्यादा काम कर रही हैं। ऐसे में ड्रग्स ने कैश की जगह ले ली। एक किलो मादक पदार्थ को किसी भी रूप में एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाया जा सकता है। गंतव्य में इसके एवज में कैश दे दिया जाता है। आयोग ने ड्रग्स की रिकॉर्ड जब्ती को गंभीरता से लिया है।

कैश और शराब पर भारी चरस–अफीम

30 मार्च तक पकड़ा गया

17 करोड़ कैश, 23 करोड़ की शराब और 38 करोड़ की ड्रग्स सीज की गई।

15 अप्रैल तक पकड़ा गया

24 करोड़ कैश, 36 करोड़ की शराब और 56 करोड़ की ड्रग्स सीज की गई।

30 अप्रैल तक पकड़ा गया

32 करोड़ कैश, 46 करोड़ की शराब और 218 करोड़ की ड्रग्स सीज की गई।

7 मई तक पकड़ा गया

34 करोड़ कैश, 49 करोड़ की शराब और 238 करोड़ रुपये की ड्रग्स सीज की गई।

दो करोड़ रुपये प्रति किलो है कीमत

मार्च में भगवतीपुर के पिंडरा गांव में एसटीएफ ने म्याऊं–म्याऊं ड्रग की बड़ी खेप पकड़ी थी। इसकी कीमत करीब 30 करोड़ रुपये थी। इसकी कीमत 2 करोड़ रुपये प्रति किलो है। म्याऊं–म्याऊं नाम का ये ड्रग कोकीन या हेरोइन की तरह प्राकृतिक नशीला पदार्थ नहीं है, बल्कि एक सिंथेटिक ड्रग है।

इसका असली नाम मेफेड्रोन है। इसे कुछ खास पौधों के कीड़े मारने के लिए एक सिंथेटिक खाद के तौर पर तैयार किया गया था। बाद में इसे नशे के तौर पर इस्तेमाल किया जाने लगा। सीज किए गए मादक पदार्थों में अफीम, चरस, गांजा से लेकर करोड़ों में बिकने वाले ऐसे ड्रग्स भी हैं।

लखनऊ। यूपी में 108 और 102 एंबुलेंस सेवा का एप हैक करने का मामला सामने आया है। एप हैक करने के बाद हैकर बिना मौके पर मौजूद हुए कर्मचारियों की 500 रुपये में उपस्थिति लगा रहे हैं। 108 व 102 हेल्पलाइन के कर्मचारियों की जीपीएस आधार एप पर उपस्थिति दर्ज होती है। आपातकालीन मेडिकल इमरजेंसी हेल्पलाइन 108 व 102 से संबंधित एक एप हैक कर लिया गया है। हैकर 500–500 रुपये लेकर सेवाओं से जुड़े कर्मचारियों की दो सप्ताह की उपस्थिति घर बैठे दर्ज कर दे रहे हैं। हैकर से इस खेल से सेवाएं प्रभावित हो रही हैं। भविष्य में बड़ी समस्या खड़ी हो सकती है। सेवा उपलब्ध कराने वाली कंपनी ने जब विभागीय जांच की तो कई अहम खुलासे हुए हैं। एंबुलेंस सेवाओं में 20 हजार से अधिक कर्मचारी कार्यरत हैं। ईएमआरआई ग्रीन हेल्थ कंपनी की तरफ से जीकेवी–ईएमआरआई नाम से एक एप उपलब्ध कराया गया है। जिसके जरिये इन कर्मचारियों की उपस्थिति दर्ज होती है। चूंकि कर्मचारियों की ड्यूटी बेहद संवेदनशील भरी होती है इसलिए एप जीपीएस आधारित है। जब कर्मचारी एंबुलेंस व उसके 50–100 मीटर के दायरे में होंगे तभी उनकी उपस्थिति दर्ज होती है। लेकिन पिछले कुछ दिनों से ये एप हैक कर लिया गया है। जिससे कर्मचारी ड्यूटी पर आए या न आएं, कहीं से भी वह उपस्थिति दर्ज कर सकते हैं। हैकर ऐसी सुविधा उपलब्ध करवा रहा है। जिसके एवज में वह 500 रुपये एक कर्मचारी से 15 दिन उपस्थिति दर्ज करने का वसूल रहा है। हैकर जीपीएस एम्युलेटर का इस्तेमाल कर रहा है।

इसलिए बेहद गंभीर है मामला

दरअसल जब हेल्पलाइन के जरिये कंट्रोल रूम में मेडिकल इमरजेंसी की सूचना दी जाती है तो कॉल अटेंड करने वाला जीपीएस के जरिये ही घटनास्थल से नजदीक उपलब्ध एंबुलेंस को देखता है। उसी पर सूचना ट्रांसफर कर दी जाती है। जिससे वह घटनास्थल पर जल्द से जल्द पहुंच सकें।

एप हैक होने की वजह से ऐसी स्थिति में एंबुलेंस पर कर्मचारी उपस्थित दर्शाये गए होंगे लेकिन हकीकत में वह वहां नहीं होंगे। इससे मेडिकल इमरजेंसी में एंबुलेंस का पहुंचना मुश्किल हो जाएगा। इसलिए ये मामला बेहद गंभीर है।

इस नाम के खाते में ली जा रही रकम

कंपनी ने अपने स्तर से जांच की। जिसमें पता चला कि खेल करने वाला शख्स कर्मचारियों को क्यूआर कोड भेज रहा है। जिसकी मदद से खाते में रकम ले रहा है। जिसकी यूपीआई आईडी दनरानउंत121013–2/वीकबिइंदा है। एक यूआरएल नंबर भी कंपनी ने जुटाया है। अंदेशा है कि हैकिंग में उसका इस्तेमाल किया गया है।

भेदी जा रही सिक्योरिटी

ए-पर फेस स्केनर भी है। जब तक फेस स्कैन नहीं होगा तब तक उपस्थिति दर्ज नहीं हो सकती। लेकिन, एप हैक होने के बाद इस सुरक्षा को भेद दिया गया है। एक तरह से इसको बाइपास किया गया है। बिना फेस स्कैन के उपस्थिति दर्ज हो जा रही है। हैकर कर्मचारियों से एक महीने से लेकर तीन महीने तक की वैधता वाला प्लान भी मुहैया करवा रहा है।

108 और 102 एंबुलेंस सेवा का एप हैक, 500 रुपये में घर बैठे लगा रहे हाजिरी, कई चौंकाने वाले खुलासे

सामूहिक छुट्टी पर गए स्टाफ पर एयर इंडिया एक्सप्रेस की सख्त कार्रवाई, 25 कर्मचारी निष्कासित

नई दिल्ली । बड़ी संख्या में कर्मचारियों को सामूहिक छुट्टी लेने से एयर इंडिया एक्सप्रेस की कई उड़ानें रद्द करनी पड़ीं थी। इसके चलते हवाई यात्रियों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा था। कर्मचारियों के साथ जारी तनाव के बीच कंपनी थोड़ी देर में बयान जारी करेगी। एयर इंडिया एक्सप्रेस एयरलाइंस ने सामूहिक छुट्टी पर गए कर्मचारियों के खिलाफ सख्त रुख अपनाया है और 25 कर्मचारियों को निष्कासित कर दिया है। एयरलाइंस से जुड़े सूत्रों का कहना है कि जिन कर्मचारियों को निष्कासित किया गया है, वो ड्यूटी पर नहीं पहुंचे थे और साथ ही उनका व्यवहार भी ठीक नहीं था।
उल्लेखनीय है कि बड़ी संख्या में कर्मचारियों को सामूहिक छुट्टी लेने से एयर इंडिया एक्सप्रेस की कई उड़ानें रद्द करनी पड़ीं थी। इसके चलते हवाई यात्रियों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा था। कर्मचारियों के साथ जारी तनाव के बीच कंपनी थोड़ी देर में बयान जारी करेगी।

कुप्रबंधन का आरोप लगा कर्मचारियों ने ली सामूहिक छुट्टी

टाटा समूह के स्वामित्व वाली कंपनी एयर इंडिया एक्सप्रेस के केबिन क्रू ने कथित कुप्रबंधन के विरोध में बुधवार को सामूहिक छुट्टी ले ली। 200 से ज्यादा कर्मचारियों के एकसाथ छुट्टी लेने से कंपनी की उड़ानों के परिचालन पर गंभीर असर पड़ा और कंपनी को 100 से ज्यादा फ्लाइट्स रद्द करनी पड़ीं। इसके चलते हवाई यात्रियों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, मंगलवार को एयर इंडिया एक्सप्रेस का परिचालन लगभग ठप होने से करीब 15 हजार यात्री प्रभावित हुए। एयर इंडिया एक्सप्रेस खाड़ी के देशों में सबसे ज्यादा उड़ानों का संचालन करती है। ऐसे में केबिन क्रू की कमी के चलते भारत से खाड़ी के देशों को जाने वाली कई उड़ानें रद्द हुईं। एयर इंडिया एक्सप्रेस घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रोजाना करीब 360 उड़ानों का संचालन करती है।

सरकार ने मांगी रिपोर्ट

बड़ी संख्या में उड़ानों के रद्द होने और यात्रियों की परेशानी को देखते हुए नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने बुधवार को एयर इंडिया एक्सप्रेस से रिपोर्ट मांगी है और एयरलाइन को कर्मचारियों के साथ मुद्दे तुरंत हल करने को कहा है। कोच्चि, कालीकट, दिल्ली और बंगलूरू सहित कई हवाई अड्डों पर एयर इंडिया एक्सप्रेस की उड़ानों में व्यवधान हुआ। अकेले दिल्ली हवाई अड्डे पर ही बुधवार शाम चार बजे तक 14 उड़ानें रद्द हुईं। एयर इंडिया एक्सप्रेस की उड़ानों में कटौती 13 मई तक जारी रह सकती है।

बसपा ने जारी की एक और लिस्ट

देवरिया सीट से ये होंगे उम्मीदवार; देखें प्रत्याशियों की सूची

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी ने लोकसभा चुनाव को लेकर उम्मीदवारों की एक और लिस्ट जारी की है। इसमें छह प्रत्याशियों के नाम है। इस सूची में यूपी की दो सीटों पर प्रत्याशियों के नाम का एलान किया गया है। जारी लिस्ट में बसपा ने कुशीनगर और देवरिया सीट से प्रत्याशियों के नाम का एलान किया है। बसपा ने देवरिया सीट से संदेश यादव को टिकट दिया है। जबकि कुशीनगर सीट से शुभ नारायण चौहान को मैदान में उतारा है।
बहुजन समाज पार्टी लोकसभा चुनाव में अकेले मैदान में है। इससे पहले दो मई को बसपा ने कैसरगंज, डुमरियागंज, गोंडा, संत कबीरनगर, बाराबंकी और आजमगढ़ सीट से प्रत्याशियों के नामों की घोषणा की थी। इसके साथ ही लखनऊ पूर्वी विधानसभा सीट पर हो रहे उपचुनाव के लिए भी उम्मीदवार के नाम का एलान किया था। बसपा ने कैसरगंज सीट पर ब्राह्मण कार्ड खेलते हुए नरेंद्र पाण्डेय को उतारा है। आजमगढ़ में प्रत्याशी बदलकर मशहूद अहमद को उम्मीदवार घोषित किया है। गोंडा से सौरभ कुमार मिश्रा, डुमरियागंज से मोहम्मद नदीम मिर्जा, संतकबीर नगर से नदीम अशरफ और बाराबंकी से शिव कुमार दोहरे को मैदान में उतारा है।

लखनऊ। बसपा सुप्रीमो मायावती के उत्तराधिकारी व पार्टी के नेशनल कोऑर्डिनेटर आकाश आनंद से अचानक सारी जिम्मेदारियां वापस लिए जाने के बाद सियासी गलियारों में इसके निहितार्थ तलाशे जाने लगे हैं। पार्टी को युवा नेतृत्व प्रदान करने के फैसले को मायावती ने लोकसभा चुनाव के दौरान क्यों पलटा, इसे लेकर तमाम कयास भी लग रहे हैं। राजनीतिक विश्लेषकों की मानें तो मायावती ने फिलहाल आकाश आनंद को हटाकर उनके सियासी भविष्य को सुरक्षित रखने की कवायद की है। इस फैसले से उन्होंने एक तीर से कई निशाने साधे हैं। उन्होंने परिवार के सदस्य पर कार्रवाई कर बसपा कॉडर को भी संदेश दिया है।
दरअसल, मायावती खुद भी भाजपा और कांग्रेस पर लगातार हमले करती रही हैं लेकिन उनकी भाषा संयमित रहती है। जबकि सीतापुर में आकाश आनंद का भाषण पार्टी लाइन के विपरीत था। इसकी वजह से उनके साथ चार प्रत्याशियों पर भी मुकदमा दर्ज हो गया, जो मायावती को बेहद नागवार गुजरा। वरिष्ठ पत्रकार के. विक्रम राव का कहना है कि मायावती के इस फैसले का निहितार्थ सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव के बयान से निकाला जा सकता है, जिसमें उन्होंने कहा कि बसपा को वोट देकर उसे खराब न करें। आकाश आनंद ने बिना सोचे–समझे जो बयान दिया, उसका असर पार्टी पर पड़ना स्वाभाविक है। वहीं, एक अन्य राजनीतिक विश्लेषक का मानना है कि आकाश आनंद के भाषणों को लोग पसंद कर रहे थे। उनकी स्थिति बसपा में मजबूत होती जा रही थी लेकिन उन्होंने भड़काऊ बातें कहकर शीर्ष नेतृत्व को नाराज कर दिया। जब तक आकाश सपा और कांग्रेस के खिलाफ बोलते रहे, किसी ने खास संज्ञान नहीं लिया। जैसे ही उन्होंने भाजपा पर हमला बोला, पार्टी में भी विरोध के सुर उठने लगे। दरअसल, लोग सत्तारूढ़ दल के खिलाफ सुनना चाहते हैं और आकाश ने भी यही तरीका अपनाया।

सपा पर दिख रहे थे नरम

वरिष्ठ पत्रकार रामदत्त त्रिपाठी के मुताबिक आकाश आनंद का सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव को बड़ा नेता कहकर नरम रुख दिखाना मायावती को रास नहीं आया। चुनाव नतीजे आने पर गठबंधन को लेकर आकाश का बड़बोलापन भी पार्टी लाइन के विपरीत था। जबकि चुनाव में मायावती खुद आक्रामक रुख नहीं अपना रही हैं। आकाश का अति उत्साह में संवेदनशील मुद्दों पर बोलना उनके लिए मुश्किलें खड़ी कर सकता था। वहीं, वरिष्ठ पत्रकार रतनमणि लाल का मानना है कि अपने कॅरिअर की शुरुआत में मुकदमा होना आकाश के लिए अच्छा संकेत नहीं है। पार्टी में उनके खिलाफ उठ रहे सुरों को मायावती ने अपने इस फैसले से शांत करने का प्रयास किया है।
साथ ही उन्होंने खुद पर लग रहे परिवारवाद के आरोपों को भी इस फैसले से खारिज करने की रणनीति अपनाई है।

पाटह्न में भी हुआ विरोध

सूत्रों की मानें तो सीतापुर में दिए गए भाषण के बाद आकाश का पार्टी में भी विरोध शुरू हो गया था। कई प्रत्याशियों के मुकदमे में नामजद होने से बसपा सुप्रीमो के पास आकाश को हटाने के सिवाय कोई विकल्प नहीं बचा था। इस तरह उन्होंने पार्टी के साथ भाजपा नेताओं की नाराजगी को भी कम करने की कवायद की है। यह भी संभावना जताई जा रही है कि लोकसभा चुनाव के नतीजे आने के बाद आकाश की बहाली भी हो सकती है।

स्वदेशी हर्बल औषधियों की दुनियाभर में हनक!

नई दिल्ली।

वाहरी दिल्ली के नजफगढ़ स्थित चौधरी व्रह्म प्रकाश आयुर्वेद चरक संस्थान (सीवीपीएसीएस) परिसर में करीव 45 एकड़ में वने हर्वल गार्डन में रोपित किए गए करीव 10 हजार दुर्लभ व स्वदेशी पौधों की औषधीय गार्डन मरीजों के लिए जीवनदायनी वन रहा है। दिल्ली सरकार के स्वायत्त यह संस्थान 95 एकड़ के हरे-भरे पर्यावरण-अनुकूल परिसर में फैला हुआ है, जिसका कुल निर्मित क्षेत्र 47,150 वर्ग मीटर है। इसमें से करीव 45 एकड़ में हर्वल गार्डन के रूप में विकसित किया गया है।

ट्रिपल टी पर फोकस : सीवीपीएसीएस के निदेशक प्रिंसिपल प्रोफेसर मनु भाई गौड़ के अनुसार 80 फीसद हर्वल गार्डन में रोपित किए गए पौधे कई तरह के दुर्लभ रोगों की रोकथाम के लिए भविष्य में उपयोग में लाई जाएंगीं। योजना के तहत इसके लिए एक केंद्रीयकृत प्रयोगशालीय लैव की स्थापना के साथ ही उसकी गुणवत्ता की टेस्टिंग को सुनिश्चित किया जाएगा। योजना को मूर्त रूप देने के वाद यह तय है कि स्वदेशी औषधीय पौधों का प्रयोग अल्जाइमर, पार्किंसन, डिमेंशिया, लिकोड्रमा, अस्थमा, दिमागी एवं अंत:स्रावी ग्रंथियों एवं यकृत संवंधी रोगों में प्रयुक्त किया जाएगा। टेस्टिंग, ट्रीटिंग, ट्रेसिंग (ट्रिपल टी) योजना के तहत संस्थान से संवद्ध अस्पताल की ओपीडी में हर दिन औसतन 1500 से अधिक मरीजों की स्क्रीनिंग करने के साथ ही गंभीर मरीजों के लिए 210 विस्तरों की आईओपीडी पूरे साल फुल रहती है। ट्रिपल टी के सिद्धांत पर एक ही छत के नीचे मरीजों को स्वदेशी पद्धति आयुर्वेद के तहत स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जा रही हैं, जिसकी धूम दुनियाभर में है।

अनुसंधान के क्षेत्र

संस्थान सीएसआईआर-त्रिसूत्र के सहयोग से 'दिल्ली/हरियाणा की उत्तर भारतीय आबादी के स्वस्थ व्यक्तियों में प्रकृति के जीनोमिक सहसंबंधों की पहचान' पर एक शोध कर रहा है। इससे अलावा यहां अश्वगंधा पर शोध किया गया है और गिलोय पर अनुसंधान चल रहा है।

- सीबीपीएसीएस परिसर में 10 हजार से ज्यादा दुर्लभ हर्बल पौधों से निर्मित दवाओं की गुणवत्ता पर फोकस
- कई जटिल रोगों का इलाज आयुर्वेदिक पद्धति से, एचवीए1सी जैसी एडवांस टेस्टिंग की सुविधा

दुर्लभ रोगों का सटीक इलाज : प्रो. गौड़ के अनुसार, सीवीपीएसीएस को पड़ोसी देशों के साथ ज्ञान साझा करने के केंद्र के अनुरूप विकसित किया जा रहा है। मोरिंगा, श्वेतपर्णी, सप्तपर्णी, आंवला, अश्वगंधा, गिलोय, त्रिफला जैसे औषधीय पेड़ों के रोपण के लिए 25 एकड़ का उपयोग, देसी गुलाव के पौधे के लिए 25 एकड़ भूमि का प्रयोग किया जा रहा है, जो कि थेरेपी, मछली उपचार के अलावा तिव्वती चिकित्सा विभाग भी विकसित किया गया है। पंचकर्म, प्राकृतिक चिकित्सा और आयुर्वेदिक इलाज जैसी विभिन्न सुविधाओं को उचित दर पर आम जनता के लिए खोला गया, ताकि अधिक से अधिक लोग इस केंद्र का लाभ उठा सकें। संस्थान वड़े आयुर्वेदिक और प्राकृतिक चिकित्सा संस्थानों के साथ गठजोड़ कर रहा है। संस्थान में रस शास्त्र के तहत प्रतिकूल दवा प्रतिक्रियाओं का डेटा वेस स्थापित करने और राष्ट्रीय फार्माकोविजिलेंस सेल स्थापित किया गया है।

नए रास्ते की तलाश

प्राचीन व पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों को अपनाने हेतु नए रास्ते तलाशने के लिए विशेषज्ञों की एक कमेटी गठित की गई है, ताकि संस्थान को दुनिया में एक अग्रणी आयुर्वेद केंद्र के रूप में विकसित किया जा सके। अस्पताल की क्षमता का विस्तार करने के साथ ही नई चिकित्सा प्रक्रियाओं को अपनाने, जरूरी नैदानिक, उपचार की पद्धति अंतरराष्ट्रीय स्तर की स्थापित की गई है, जिससे मरीज का स्वदेशी पद्धतियों के प्रति भरोसा बढ़ रहा है। ओपीडी में बढ़ते मरीजों का दबाव, जांच में तेजी, दक्ष वैद्यों की उपस्थिति से इसकी तस्दीक की जा सकती है। हमारा लक्ष्य लोगों को प्राचीन आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धतियों का लाभ उठाने में मदद करना है।

- प्रो. डा. एमबी गौड़ (निदेशक-प्राचार्य चौधरी ब्रह्म प्रकाश आयुर्वेद चरक संस्थान)

घर खरीदते हुए किंग खान याद आए राजकुमार को

एंटरटेनमेंट डेस्क। बॉलीवुड अभिनेता राजकुमार राव अपनी आगामी फिल्म 'श्रीकांत' को लेकर सुर्खियों में बने हुए हैं। दर्शकों में अभी से ही उनकी इस फिल्म को लेकर काफी उत्साह देखने को मिल रहा है। वहीं हाल ही में एक इंटरव्यू के दौरान राजकुमार राव अपनी फिल्म के अलावा शाहरुख खान द्वारा दिए गए एक सलाह के बारे में भी खुलासा करते दिखाई दिए।

राजकुमार राव ने हाल ही में एक घर खरीदा है। यह घर काफी बड़ा और आलिशान है। इस घर को राजकुमार राव ने अपनी पत्नी पत्रलेखा के साथ मिलकर खरीदा है। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो इस की कीमत 44 करोड़ रुपये है। राजकुमार राव अपने इंटरव्यू के दौरान कहते हैं, 'एक बार शाहरुख सर ने मुझ से कहा था कि बेटा घर तो अपने औकात से थोड़ा ज्यादा का लेना। तुम जब हैसियत से ज्यादा का घर खरीद लेते हो तब उसके लिए उतनी मेहनत भी करते हो'। राजकुमार राव अपनी बात जारी रखते हुए कहते हैं, 'शाहरुख सर की इस सलाह को मैंने याद रखा हुआ है। उन्होंने मुझे जब यह सलाह दिया था तब उन्होंने मुझे समझाया था कि तुम जब मेहनत करते हो तब भगवान भी तुम्हारी मदद करते हैं। मुझे उनकी यह बात काफी पसंद आई थी'। राजकुमार राव और उनकी पत्नी ने मिलकर अपने नए घर को काफी प्यार से सजाया है। राजकुमार राव कहते हैं, 'मेरा हमेशा से सपना था कि इस शहर में मेरा भी एक घर हो और वह सपना अब जाकर पूरा हुआ है'। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो राजकुमार का घर एक आलीशान घर है, जो कथित तौर पर 3456 वर्ग फुट में फैला है। इस घर की पूर्व मालकिन जान्हवी कपूर थीं'।

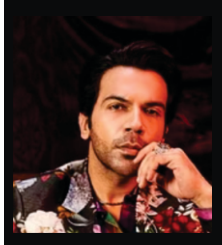

हीरामंडी देखने के बाद रेखा ने सोनाक्षी के लिए कहा कुछ ऐसा

एंटरटेनमेंट डेस्क। सोनाक्षी सिन्हा को 1 मई को रिलीज हुई संजय लीला भंसाली की 'हीरामंडी' में देखा गया। इस वेब सीरीज में सोनाक्षी के काम की जमकर तारीफ हो रही है। प्रशंसकों के साथ–साथ इडंस्ट्री के तमाम सितारों को भी सोना का काम पसंद आया है। हाल ही में एक इंटरव्यू के दौरान सोनाक्षी सिन्हा ने सीरीज में अपने काम के लिए दिग्गज अदाकारा रेखा से मिली तारीफों का जिक्र किया। सोनक्षी सिन्हा ने कहा कि 'हीरामंडी' के प्रीमयर के दौरान रेखा ने उनके काम को सराहा। यहां तक कि रेखा ने खुद को सोनाक्षी की दूसरी मां तक कह दिया। सोनाक्षी ने खुलासा किया कि रेखा बहुत उत्साहित थीं। सोनाक्षी ने कहा कि, 'उन्होंने मेरी मां से कहा कि वे मेरी दूसरी मां हैं'। और जब मैं और मेरी मां वहां मौजूद थे तो उन्होंने मेरी मां से कहा, 'ये मेरी बेटी है, आपकी बेटी नहीं,'। रेखा से अपने लिए इतनी तारीफ सुनकर सोनाक्षी हैरान रह गईं।

केवल पहले दो एपिसोड देखने के बावजूद, रेखा, सोनाक्षी के किरदार से बहुत प्रभावित हुईं। सोनाक्षी ने इस सीरीज में दोहरी भूमिकाएं अदा की हैं। वे रिहाना और फरीदन के किरदार में हैं। रेखा को सोनाक्षी का रिहाना का किरदार काफी ज्यादा पसंद आया। रेखा जैसी दिग्गज अभिनेत्री से तारीफ पाकर सोनाक्षी की खुशी का ठिकाना नहीं है। उन्होंने इसके लिए रेखा का शुक्रिया अदा किया है। सोनाक्षी सिन्हा ने कहा, 'उनके शब्द मेरे लिए बहुत मायने रखते हैं, क्योंकि आप जानते हैं कि वह खुद अपने काम के साथ–साथ अपने लुक्स और खूबसूरती के लिए भी किस कदर मशहूर हैं। वे दीवा हैं। इसके अलावा एक इंसान के रूप में भी उनका जवाब नहीं। उनसे अपनी तारीफ सुनना बहुत शानदार अनुभव है'। सीरीज 'हीरामंडीः द डायमंड बाजार' में आजादी से पहले के भारत को दिखाया गया है। इसमें सोनाक्षी के अलावा ऋचा चड्ढा, अदिति राव हैदरी, मनीषा कोइराला, संजीदा शेख, शर्मिन सेगल जैसी कलाकार भी हैं। इनके अलावा शेखर सुमन, फरदीन खान और श्रुति शर्मा भी अहम भूमिकाओं में हैं। यह सीरीज नेटफ्लिक्स पर उपलब्ध है।

'भाभीजी घर पर है' की ये हसीना उड़ाएगी गर्दा 'बिग बास' में मचा चुकी हैं सनसनी

खतरों के खिलाड़ी सीजन 14 अपने आगाज से पहले ही चर्चा में बना हुआ है। शो को लेकर अब तक कई अपडेट्स आ चुकी हैं। हाल ही में खतरों के खिलाड़ी सीजन 14 के शूटिंग लोकेशन को लेकर जानकारी सामने आई थी। वहल अब शो में शामिल होने वाले एक कंटेस्टेंट को लेकर खबर आई है।

एंटरटेनमेंट डेस्क। रोहित शेट्टी के स्टंट बेस्ड रियलिटी शो खतरों के खिलाड़ी सीजन 14 को लेकर अपडेट आई है। शो में शामिल होने के लिए अब तक कई सेलेब्स के नाम पहले ही सामने आ चुके हैं। वहीं, अब टीवी की एक और हसीना का नाम खतरों के खिलाड़ी 14 से जुड़ रहा है, जो थोड़ा हैरान करने वाला है, क्योंकि शो के मेकर्स से इनका पहले पंगा रह चुका है।

खतरों के खिलाड़ी 14 में शामिल होने के लिए जिस एक्ट्रेस के नाम की चर्चा हो रही है, वो टीवी पर खूब नाम कमा चुका की है। जिस भी शो में हिस्सा लिया लाइमलाइट ही लूटी। यहां तक कि सलमान खान के विवादित शो बिग बॉस सीजन 11 में भी हिस्सा ले चुकी है और विनर बनकर बाहर आई थीं।

नाम सुन बढ़ जाएगा एक्साइटमेंट

रोहित शेट्टी इस बार खतरों के खिलाड़ी 14 में खतरों का लेवल और बढ़ाने वाले हैं। हर नए सीजन के साथ वो कुछ ट्विस्ट और टर्न लेकर आते हैं। ऐसे में दर्शकों को नए सीजन का इंतजार है। सबसे ज्यादा दिलचस्पी शो में शामिल होने वाले कंटेस्टेंट्स को लेकर बना हुआ है। इस बार जो नाम सामने आया है, वो जरुर फैंस का एक्साइटमेंट बढ़ाने वाला है।

कौन है वो पश्धपुलर एक्ट्रेस ?

खतरों के खिलाड़ी 14 में टीवी की पॉपुलर हीरोइन शिल्पा शिंदा शामिल होने वाली है। उन्होंने खतरों से भरी इस दुनिया में अपनी दावेदारी ठोक दी है। जूम के अनुसार, खतरों के खिलाड़ी 14 के मेकर्स ने उन्हें अप्रोच किया है। हालांकि, अभी आधिकारिक तौर पर कुछ नहीं कहा गया है। हालांकि, शिल्पा शिंदे का कलर्स चैनल के शो खतरों के खिलाड़ी 14 में नजर आना काफी हैरान करने वाला है।

मेकर्स से ले चुकी हैं पंगा

शिल्पा शिंदे सेलिब्रिटी डांस रियलिटी शो झलक दिखला जा सीजन 10 में नजर आई थीं। इस दौरान उन्होंने शो को लेकर काफी कुछ पब्लिक में कहा था। शिल्पा शिंदे ने शो से बाहर होने के बाद एक वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर किया था, जिसमें उन्होंने जज करण जौहर और नोरा फतेही पर निया शर्मा और रुबीना दिलैक को फेवर देने का आरोप लगाया था। इसके बाद उनके और शो के मेकर्स कलर्स चैनल के बीच मनमुटाव हो गया था। हालांकि, अब लग रहा है दोनों के बीच सबकुछ ठीक हो गया है, इसलिए उन्हें खतरों के खिलाड़ी 14 के लिए अप्रोच किया गया है।

खतरों के खिलाड़ी 14 में शामिल होने के लिए जिस एक्ट्रेस के नाम की चर्चा हो रही है, वो टीवी पर खूब नाम कमा चुका की है। जिस भी शो में हिस्सा लिया लाइमलाइट ही लूटी। यहां तक कि सलमान खान के विवादित शो बिग बश्धस सीजन 11 में भी हिस्सा ले चुकी है और विनर बनकर बाहर आई थी।

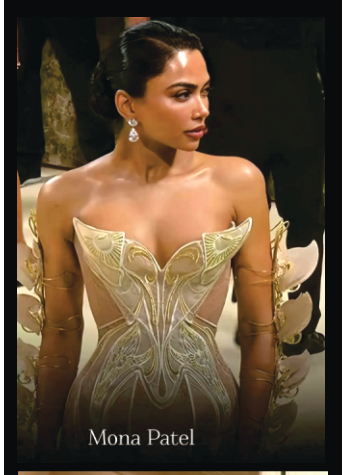
Mona Patel

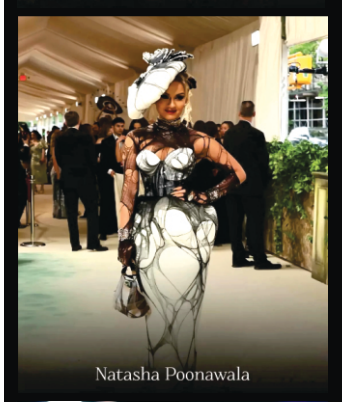
Natasha Poonawala

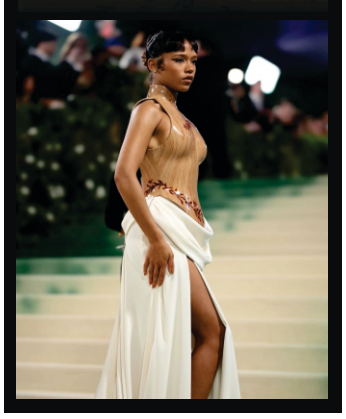

गला सुखा देगी मेट गाला की ड्रेस की कीमत

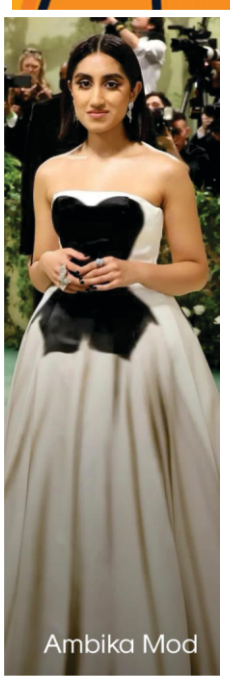
Ambika Mod

मनोरंजन। हाल ही में, दुनिया के सबसे बड़े फैशन इवेंट मेट गाला का आयोजन किया गया। न्यूयॉर्क स्थित मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट में 6 मई को इस कार्यक्रम का भव्य रुप से आयोजन हुआ, जिसमें दुनिया भर की मशहूर हस्तियों ने शिरकत की। हर बार की तरह इस बार भी महिला कलाकारों की ड्रेस ने जमकर सुर्खियां बटोरी। हर साल इस इवेंट में शामिल होने वाली कलाकार महंगी से महंगी ड्रेस पहनकर अपना जलवा बिखेरती हैं। आज हम आपको ऐसी ही कुछ सेलेब्रिटी के बारे में बताएंगे जो मेट गाला में इतनी महंगी ड्रेस पहन चुकी हैं, जिसकी कीमत सुनकर आप दंग रह जाएंगे।

किम कार्दशियन

किम कार्दशियन की साल 2022 में पहनी गई ड्रेस की काफी चर्चा हुई थी। उस साल के मेट गाला में किम ने अपनी ड्रेस से सबका ध्यान खींचा था। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, उनकी ड्रेस की कीमत 4.8 मिलियन डॉलर थी।

बेयान्से

बेयॉन्से भी मेट गाला में सबसे महंगी ड्रेस पहनने वाली महिला कलाकारों में शामिल हैं। साल 2016 के मेट गाला में खूब सुर्खियां बटोरी थीं। उनकी ड्रेस में असली मोती लगे हुए थे। ड्रेस की सही कीमत का खुलासा तो नहीं हो पाया, लेकिन मीडिया रिपोर्ट्स में यह जरूर बताया गया कि एक मोती की कीमत 8,000 डॉलर थी।

रिहाना

रिहाना ने साल 2015 में चाइनीज फैशन डिजाइनर की ड्रेस पहनी थीं। उनका पीले रंग का गाउन खूब चर्चित हुआ था। कई लोगों ने इसे पसंद किया तो कुछ ने इस पर मीम्स भी बनाए थे। रिहाना की उस ड्रेस की कीमत 50 हजार डॉलर बताई गई थी। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक उस ड्रेस को बनाने में दो साल से ज्यादा लगे थे।

एम्मा चेम्बरलेन

साल 2022 के मेट गाला में एम्मा चेम्बरलेन का लुक पूरी दुनिया में छा गया था। भारत में भी इसकी चर्चा हुई थी। दरअसल, इसकी वजह यह थी कि एम्मा ने पटियाला के महाराजा रहे भूपिंदर सिंह का नेकलेस पहना था।

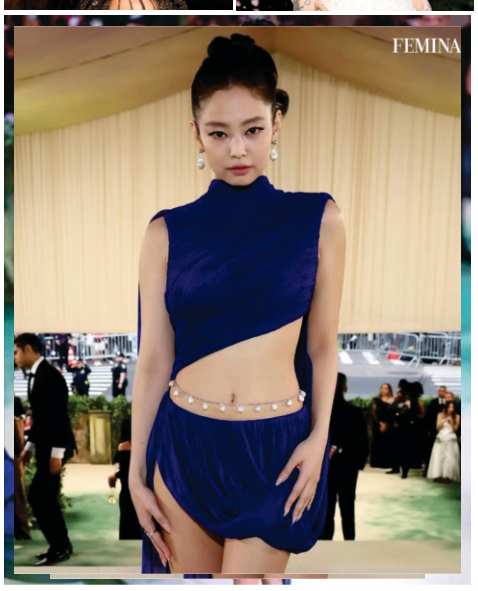

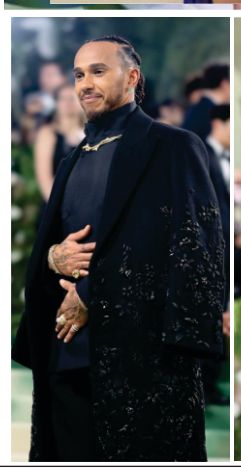

राहुल ही नहीं रास टेलर भी हो चुके हैं टीम मालिक के गुस्से का शिकार, शून्य पर आउट होने की मिली थी सजा

स्पोर्ट्स डेस्क। टेलर की आत्मकथा के मुताबिक, किंग्स इलेवन पंजाब के खिलाफ मोहाली में खेले गए एक मैच के बाद उनके चांटा मारा गया था। इस मैच में वह शून्य पर आउट हुए थे। हालांकि, टेलर ने फ्रेंचाइजी के मालिक का नाम नहीं बताया जिसने उनके साथ हाथापाई की थी। लनखऊ सुपर जाएंट्स के खराब प्रदर्शन की वजह से केएल राहुल को टीम के मालिक संजीव गोयनका की लताड़ का सामना करना पड़ा।

आईपीएल में ऐसा पहली बार नहीं हुआ, इससे पहले न्यूजीलैंड के महान खिलाड़ी रॉस टेलर को भी फ्रेंचाइजी मालिक के गुस्से का सामना करना पड़ा था। यह घटना आईपीएल 2011 की है जिसमें महान बल्लेबाज रॉस टेलर पर एक फ्रेंचाइजी मालिक ने हाथ उठा दिया था। इस बात का खुलासा पूर्व खिलाड़ी ने अपनी आत्मकथा, रॉस टेलरः ब्लैक एंड व्हाइट में किया।

टेलर की आत्मकथा के मुताबिक, किंग्स इलेवन पंजाब के खिलाफ मोहाली में खेले गए एक मैच के बाद उनके चांटा मारा गया था। इस मैच में वह शून्य पर आउट हुए थे। हालांकि, टेलर ने फ्रेंचाइजी के मालिक का नाम नहीं बताया जिसने उनके साथ हाथापाई की थी।

बल्लेबाज ने आत्मकथा में क्या लिखा?

टेलर ने लिखा, "195 रन का पीछा करना था, मैं शून्य पर एलबीडब्ल्यू आउट हो गया और हम करीब नहीं पहुंच पाए। बाद में टीम, सपोर्ट स्टाफ और मैनेजमेंट होटल की सबसे ऊपरी मंजिल पर बार में थे। लिज हर्ले वहां शेन वॉर्न के साथ थीं। इसी दौरान राजस्थान रॉयल्स के मालिकों में से एक ने मुझसे कहा, 'रॉस हमने डक पर आउट होने के लिए तुम्हें एक मिलियन डॉलर का भुगतान नहीं किया है और मेरे चेहरे पर तीन या चार बार थप्पड़ मारे। वह हंस रहा था। भले ही वह झापड़ जोर से नहीं मारे गए थे, लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि यह पूरी तरह से नाटक था। मैं इसे मुद्दा नहीं बनाऊंगा, लेकिन मैं कई पेशेवर खेल परिवेशों में ऐसा होने की कल्पना नहीं कर सकता।"

टेलर का करियर

आईपीएल 2011 में रॉस टेलर ने राजस्थान रॉयल्स के लिए कुल 12 मैच खेले थे। इनमें उन्होंने 119 के स्ट्राइक रेट से 181 रन बनाए थे। इस घटना के सामने के आने के बाद राजस्थान की तरफ से आज तक कोई प्रतिक्रिया नहीं दी गई। फ्रेंचाइजी ने उन्हें एक मिलियन अमेरिकी डॉलर में खरीदा था। अपने आईपीएल करियर में टेलर ने कुल 55 मैच खेले। इनमें उन्होंने 1017 रन बनाए। राजस्थान के अलावा वह दिल्ली डेयरडेविल्स और पुणे वॉरियर्स इंडिया के लिए खेल चुके हैं।

सपोर्ट स्टाफ और मैनेजमेंट होटल की सबसे ऊपरी मंजिल पर बार में थे। लिज हर्ले वहां शेन वार्न के साथ थल। इसी दौरान राजस्थान रायल्स के मालिकों में से एक ने मुझसे कहा, 'रास हमने डक पर आउट होने के लिए तुम्हें एक मिलियन डालर का भुगतान नहीं किया है और मेरे चेहरे पर तीन या चार बार थप्पड़ मारे। वह हंस रहा था। भले ही वह झापड़ जोर से नहल मारे गए थे, लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि यह पूरी तरह से नाटक था।

हार के बाद टूटा राहुल का मनोबल, अगले दो मैचों में नहीं करेंगे कप्तानी

स्पोर्ट्स डेस्क। लखनऊ सुपरजाएंट्स के लिए आईपीएल प्लेऑफ की राहें कठिन हो गई है और माना जा रहा है कि टीम के कप्तान केएल राहुल शेष दो मैचों में टीम की कमान नहीं संभालेंगे। लखनऊ को बुधवार को सनराइजर्स हैदराबाद से 10 विकेट से करारी हार का सामना करना पड़ा था। समझा जाता है कि राहुल जिन्हें लखनऊ ने 2022 की मेगा नीलामी में 17 करोड़ रुपये में खरीदा था उन्हें 2025 सीजन के लिए रिटेन नहीं किया जाएगा। इस बीच, यह रिपोर्ट आई है कि राहुल अपनी बल्लेबाजी पर ध्यान केंद्रित करने के लिए इस सीजन शेष मैचों में कप्तानी नहीं करेंगे।

कप्तानी को लेकर नही लिया गया फैसला

आईपीएल के सूत्र ने न्यूज एजेंसी पीटीआई के हवाले से कहा, टीम के दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ अगले मैच से पहले पांच दिन का फासला है। फिलहाल इस बारे में कोई फैसला नहीं लिया गया है, लेकिन अगर राहुल अगले दो मैचों में अपनी बल्लेबाजी पर ध्यान लगाना चाहते हैं तो इससे प्रबंधन को कोई दिक्कत नहीं होगी।

हार के बाद राहुल पर गुस्सा हुए थे संजीव गोयनका

लखनऊ ने हैदराबाद के सामने जीत के लिए 167 रनों का लक्ष्य रखा था, लेकिन सनराइजर्स हैदराबाद के लिए ट्रेविस हेड और अभिषेक शर्मा की सलामी जोड़ी ने ताबड़तोड़ बल्लेबाजी करते हुए 10 ओवर पूरे होने से पहले ही लक्ष्य हासिल कर लिया था। इस मैच में हेड ने 30 गेंदों पर नाबाद 89 रन और अभिषेक ने 28 गेंदों पर नाबाद 75 रनों की पारी खेली थी। इस हार के बाद एक वीडियो वायरल हुआ जिसमें लखनऊ के मालिक संजीव गोयनका कप्तान राहुल पर गुस्सा करते दिखे। मालूम हो कि हैदराबाद के खिलाफ लखनऊ के बल्लेबाज रन बनाने के लिए संघर्ष करते दिखे थे।

राहुल की स्ट्राइक रेट ने खड़े किए सवाल

केएल राहुल ने हैदराबाद के खिलाफ 33 गेंदों पर 29 रन बनाए और पावरप्ले में आक्रमक बल्लेबाजी नहीं कर सके जो टीम का कम स्कोर बनाने का कारण रहा। भारतीय बल्लेबाज ने इस सीजन 12 मैचों में 460 रन बनाए हैं और वह फिर 500 रन का आंकड़ा पार कर सकते हैं, लेकिन इस दौरान उनका स्ट्राइक रेट 136.09 का रहा है जिसने सवाल खड़े कर दिए हैं।

लखनऊ के लिए आगे की राह बेहद कठिन

लखनऊ की टीम हैदराबाद के खिलाफ हार के बाद प्लेऑफ की दौड़ से लगभग बाहर हो चुकी है, लेकिन गणित के आधार पर अभी भी रेस में बनी हुई है। लखनऊ का सामना अब 14 मई को दिल्ली से, जबकि 17 मई को वानखेड़े में मुंबई इंडियंस से होना है। लखनऊ को अपनी उम्मीद बरकरार रखने के लिए शेष दोनों मैच जीतने होंगे और अगर टीम 16 अंक लेने में सफल रही तो उसके लिए थोड़ी संभावनाएं बन सकती हैं। हालांकि लखनऊ का नेट रन रेट –0.760 का है जिससे उसके लिए आगे की राहें बेहद कठिन हो गई है। अगर राहुल कप्तानी छोड़ने का फैसला करते हैं तो उपकप्तान निकोलस पूरन शेष दो मैचों के लिए टीम की कमान संभाल सकते हैं।

दी नेक्स्ट पोस्ट
स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा हुसैनिया बिल्डिंग बक्सीपुर गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी गंगा टोला, निकट जानकी बिल्डिंग मैटेरियल बसारतपुर पश्चिमी, गोरखपुर से प्रकाशित। पिनः– 273003
Tital code: UPHIN51019
बृजेन्द्र कुमार
मो0. नं0. 7307180148,9170772370
Email- thenextpost01@gmail.com
नोटः– समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद-विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होगे।

स्पोर्ट्स डेस्क। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली ने पंजाब किंग्स के खिलाफ शानदार बल्लेबाजी की। कोहली 47 गेंद में सात चौके और छह छक्के की मदद से 92 रन बनाकर आउट हुए। उनकी इस शानदार बल्लेबाजी के दम पर ही आरसीबी ने पंजाब के सामने 242 रनों का लक्ष्य रखा। कोहली ने इसके साथ ही आईपीएल 2024 में 600 रन भी पूरे कर लिए हैं। कोहली ऑरेंज कैप की दौड़ में सबसे आगे चल रहे हैं।

चौथी बार आईपीएल के किसी सीजन में बनाए 600+ रन

कोहली ने चौथी बार आईपीएल के किसी सीजन में 600 से अधिक रन बनाने का कारनामा किया। उन्होंने इस मामले में लखनऊ सुपरजाएंट्स के कप्तान केएल राहुल की बराबरी कर ली है। राहुल और कोहली ने चार–चार बार आईपीएल में 600 से अधिक रन बनाए हैं। यह दोनों बल्लेबाजी आईपीएल में सबसे ज्यादा बार 600 से अधिक रन बनाने वाले बल्लेबाज हैं। इनके अलावा आरसीबी के लिए खेल चुके क्रिस गेल और फिलहाल दिल्ली कैपिटल्स की ओर से खेल रहे डेविड वॉर्नर तीन–तीन बार आईपीएल में 600+ रन बना चुके हैं। वहीं, आरसीबी के कप्तान फाफ डुप्लेसिस ने दो बार ऐसा किया है।

आईपीएल में दूसरी बार नर्वस 90 का शिकार हुए कोहली

कोहली को इस मैच दो बार जीवनदान मिला था। कोहली एक बार खाता खोले बिना आउट होने से बचे, जबकि दूसरी बार 10 रन के स्कोर पर उनका कैच छूटा। दिलचस्प बात यह है कि दोनों ही मौकों पर उन्हें कवेरप्पा की गेंद पर जीवनदान मिले। कोहली ने इसका भरपूर फायदा उठाया और जमकर रन बनाए। ऐसा लगा कि वह शतक पूरा कर लेंगे, लेकिन विराट अपने नौवें शतक से चूक गए। उन्हें अर्शदीप सिंह ने राइली रूसो के हाथों कैच कराया। आईपीएल में यह दूसरी बार है जब कोहली नर्वस 90 का शिकार हुए हैं। इससे पहले वह 2013 में दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ दिल्ली में खेले गए मैच में 99 रन पर आउट हुए थे।

तीन टीमों के खिलाफ कोहली बना चुके हैं 1000+ रन

कोहली ने इस मैच में कई रिकॉर्ड अपने नाम किए। कोहली ने अपनी शानदार अर्धशतकीय पारी के दम पर पंजाब किंग्स के खिलाफ 1000 रन पूरे करने की उपलब्धि भी हासिल कर ली। कोहली अब तक आईपीएल में तीन टीमों के खिलाफ 1000+ रन बना चुके हैं। कोहली ने पंजाब के अलावा चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) और दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ भी एक हजार से अधिक रन पूरे किए हैं। सबसे ज्यादा टीमों के खिलाफ 1000+ रन बनाने का रिकॉर्ड भी कोहली के नाम हो गया है। उन्होंने इस मामले में रोहित शर्मा और डेविड वॉर्नर को पीछे छोड़ा। रोहित ने दिल्ली और कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर), जबकि वॉर्नर ने केकेआर और पंजाब किंग्स के खिलाफ 1000+ रन बनाए हैं।